A CSR Initiative by P&G Shiksha and Pratham Education Foundation

गर्मी की छुट्टियों में

कमाल का कैम्प 2025

प्रथम एजुकेशन फ़ाउंडेशन

विषय–सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	1
2.	पूर्व तैयारी	2
3.	मूल्यांकन	3
4.	निर्देशिका	4–8
5.	आओ खेलें	9–12
6.	शिक्षण सामग्री	13–15
7.	आज का सवाल	16–17
8.	कहानियाँ	18–24
9.	टेस्टिंग टूल	25–26
10.	प्रपत्र	27–29

कमाल का कैम्प सहमति पत्र

प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन (प्रथम) भारत की सबसे बड़ी गैर सरकारी संस्थाओं में से एक है। इसका पंजीकृत कार्यालय मुंबई में है। प्रथम 30 से अधिक वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करता आ रहा है।

जैसा कि आप जानते हैं, आप प्रथम द्वारा संचालित 'कमाल का कैम्प' की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। इसके संदर्भ में, प्रथम अपने स्वयंसेवियों/प्रतिनिधियों के द्वारा गतिविधियों में प्रतिभाग करने के दौरान आपके बारे में कुछ मूलभूत जानकारियाँ और कुछ अन्य चीज़ें एकत्र करेगा, जिसमें आपका नाम, स्थान, मोबाइल नम्बर, शैक्षणिक जानकारी, फोटो, वीडियो और आवाज़ की रिकॉर्डिंग (सामग्री के तौर पर) आदि शामिल होंगे।

इकट्ठा की गई जानकारियों/सामग्रियों का कुछ हिस्सा/पूरा हिस्सा निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाएगा :

1. प्रथम के प्रकाशनों में, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डोनर को रिपोर्ट करने में, मीडिया, सोशल मीडिया (फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, एक्स, थ्रेड्स, आदि) और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स (जैसे – प्रथम की वेबसाइट) एवं सीखने–सिखाने के बारे में जागरुकता हेतु।
2. प्रथम के चेरिटेबल कार्य के बारे में जागरुकता के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डोनर्स के साथ साझा करने हेतु।

अतः आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त जानकारियों को एकत्र करने, जमा करने और सीखने–सिखाने की सामग्री के रूप में इस्तेमाल करने की सहमति दीजिए। हालाँकि, इच्छानुसार आप अपनी जानकारियाँ/सामग्रियों को साझा करने से मना भी कर सकते हैं।

अगर आप अपनी सामग्रियों के इस्तेमाल की उपर्युक्त शर्तों से सहमत हैं, तो कृपया नीचे हस्ताक्षर कीजिए :

मैं .... की पुत्री/का पुत्र .... हूँ, मेरी आयु .... वर्ष, पता– गाँव/शहर .... मोहल्ला/ब्लॉक .... है, निम्नलिखित के लिए अपनी सहमति देती/देता हूँ।

मैं, प्रथम व उसके स्वयंसेवियों/प्रतिनिधियों को बिना किसी दबाव के मुझसे सम्बंधित उपर्युक्त जानकारियों/सामग्रियों के उपयोग करने, जमा करने, साझा करने तथा प्रकाशित करने की सहमति देती/देता हूँ।

यदि मैं किसी भी समय यह निर्णय लेती/लेता हूँ कि इस जानकारी को प्रथम की वेबसाइट या स्टोरेज प्लेटफॉर्म से हटाया, अपडेट या संशोधित किया जाना चाहिए, तो मैं प्रथम के स्वयंसेवी/प्रतिनिधि को फोन/ईमेल के माध्यम से सूचित करूँगी/करूँगा, जिसके बाद लिखित रूप में सहमति की वापसी/अपडेशन के लिए अनुरोध करूँगी/करूँगा। पन्द्रह कार्य दिवसों के दौरान किए गए अनुरोध के अनुसार प्रथम इसे हटा देगा या सुधार/अपडेट करेगा। इस सम्बंध में, संपर्क करने के लिए विवरण नीचे उल्लेखित किया गया है।

मैंने सभी तथ्यों को अच्छी तरह से पढ़ा और/या मुझे स्थानीय भाषा में समझाया गया और मैं सभी नियमों और जानकारियों के इस्तेमाल के उद्देश्यों को पूरी तरह से समझती/समझता हूँ।

मैं इस सहमति पत्र को स्वीकार करते हुए यह पुष्टि करती/करता हूँ कि इकट्ठा की गई जानकारियों/सामग्रियों के उपयोग के बारे में किसी भी तरह का कोई भी दावा नहीं करूँगी/करूँगा।

स्वयंसेवी का हस्ताक्षर : .... माता/पिता/अभिभावक का हस्ताक्षर : ....

नाम .... फोन : .... गाँव/शहर : ....

जिला : .... राज्य : .... दिनाँक : ....

सम्पर्क करने का विवरण :

प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन

लखनऊ कार्यालय : B1/13, सेक्टर – एच, अलीगंज, लखनऊ, उ0प्र0 –226024

ईमेल : dataprotectionofficer@pratham-org

सम्पर्क सूत्र : 0522–4102455 | +91 9795893654 | www-pratham-org

सी.आई.एन : U80101MH 2002NPL136300

प्रस्तावना

कमाल का कैम्प : 'कैच–अप' अभियान

गर्मी की छुट्टियों में एक प्रयास : क्यों ज़रूरी है ?

गर्मी की छुट्टियों में 'प्रथम' कक्षा 5 से 6 तक के बच्चों के लिए एक समर कैम्प आयोजित करने जा रहा है। इस कैम्प का उद्देश्य बच्चों की कक्षा के स्तर के अनुसार पढ़ने–लिखने और बुनियादी गणित की क्षमताओं को मज़बूत करना है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, अभी भी कई बच्चे अपनी कक्षा के अपेक्षित पाठ्यक्रम के स्तर तक नहीं पहुँच पाए हैं। हालांकि सभी कक्षाओं के बच्चों की शिक्षा को मज़बूती देने की आवश्यकता है, लेकिन हमारा मुख्य ध्यान कक्षा 5 से 6 के बच्चों पर रहेगा। विशेष रूप से, कक्षा 5 के वे बच्चे जो इस वर्ष (2025–26) उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करेंगे, उन्हें गणितीय कौशल को प्राप्त करने में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। हम मिलकर उनकी इस यात्रा में मदद करेंगे।

अलग–अलग राज्यों में कार्य करने का हमारा अनुभव यह है कि समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से स्थानीय युवा, स्वयंसेवी के रूप में बच्चों की बुनियादी साक्षरता और गणित को मज़बूत करने में सक्षम होते हैं और उत्साह से आगे आते हैं। उनके काम की सफलता बच्चों की प्रगति में दिखती है। इसलिए इस प्रयास को **"कमाल का कैम्प"** नाम दिया गया है।

इस उम्र के बच्चों को अगर उनके **वर्तमान स्तर से पढ़ाना शुरू किया जाए, तो वे तेज़ी से सीख सकते हैं।** यदि एक बार कोई बच्चा समझ के साथ पढ़ना सीख जाता है, तो वह अपने आप आगे बढ़ सकता है। हमारा मानना है कि आने वाली **गर्मी की छुट्टियों में पाँचवीं से छठवीं में जाने वाले** बच्चों के बुनियादी गणितीय कौशल को मज़बूत किया जा सकता है, ताकि बच्चे **कक्षा 6 में तैयारी के साथ पहुँचें।** अगर हर गाँव में कुछ उत्साही और ऊर्जावान युवा तैयार हो जाएँ तो यह प्रयास बहुत अच्छे से सफल हो सकता है। क्या इस प्रयास में आप शामिल होना चाहेंगे? हमारी पूरी कोशिश यह रहेगी कि देश के हर गाँव से लोग इस अभियान में जुड़ें। इस अभियान में जुड़ने के लिए आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ! हमारी यह कोशिश ज़रूर सफल होगी।

आपसे आशा रखते हुए

प्रथम एजुकेशन फ़ाउंडेशन टीम

राज्य : उत्तर प्रदेश

पता : लखनऊ कार्यालय : B1 / 13, सेक्टर – एच, अलीगंज, लखनऊ, उ0प्र0 –226024
ईमेल : dataprotectionofficer@pratham-org
सम्पर्क सूत्र : 0522–4102455 | +91 9795893654 | www-pratham-org

नोट : इस पुस्तिका में बहुत सारे खेल (आओ खेलें पृष्ठ 9–12) दिए गए हैं। ये खेल किसी भी आयु वर्ग और कक्षा के बच्चों के साथ खेले जा सकते हैं।

कैम्प से पहले हमारी पूर्व तैयारी

1. कैम्प के लिए साफ़–सुथरी जगह ढूँढें जहाँ बच्चों के लिए सुरक्षित और बेहतर वातावरण हो।

   इसके लिए घर का बरामदा, पेड़ की छाँव या गाँव का कोई चबूतरा चुन सकते हैं। जहाँ :

   - बच्चों के साथ खेल खेलने के लिए जगह हो।
   - अगर संभव हो तो ब्लैकबोर्ड बनाया जा सके।
   - रोल प्ले करने के लिए जगह हो।
   - बच्चों द्वारा किए गए कार्य एवं बनाई गई कला प्रदर्शनी को लटकाया/चिपकाया जा सके।

2. कुछ चीज़ें बनाइए जैसे : अंक कार्ड, पासे, संख्या डायरी, शाब्दिक सवाल आदि।
3. कैम्प में 12–15 बच्चे हों।
4. कैम्प रोज़ 1–2 घंटे के लिए चलाया जाए।

"कमाल का कैम्प" में हर एक सप्ताह में क्या कीजिए?

सप्ताह	सोमवार से शुक्रवार	शनिवार
सप्ताह–1	वॉर्म–अप और बच्चों का मूल्यांकन	
सप्ताह–2	"कमाल के कैम्प" की गतिविधियाँ	गणित के प्रोजेक्ट कार्य कहानी सम्बंधित गतिविधि माथापच्ची गणित मॉडल की प्रदर्शनी लगाना
सप्ताह–3		
सप्ताह–4		
सप्ताह–5		
सप्ताह–6	कैम्प का समापन समारोह	

समापन समारोह

- गाँव के अभिभावकों, स्कूल के शिक्षक, गाँव के प्रधान, सम्मानित लोगों और बच्चों को किसी सार्वजनिक स्थान पर एकत्र कीजिए।
- बच्चों के साथ चित्र प्रतियोगिता/गणित माथापच्ची प्रतियोगिता/आज का गणितीय सवाल/खेल प्रतियोगिता आदि कीजिए। मोहल्ले के अभिभावकों को भी बच्चों का सहयोग करने में शामिल कीजिए।
- बच्चों द्वारा बनाई गई कहानी/गणितीय माथापच्ची/अन्य चीज़ों की प्रदर्शनी लगवाइए।
- "कमाल कैम्प" के आँकड़ों और बच्चों की उपस्थिति के बारे में चर्चा कीजिए।
- गाँव के अभिभावकों, स्कूल के शिक्षक, गाँव के प्रधान एवं सम्मानित लोगों द्वारा स्वयंसेवी को उत्साहित और सम्मानित कीजिए।

स्वयंसेवक द्वारा किए जाने वाले कार्य

1

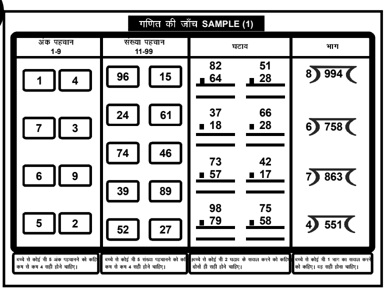

- **टेस्टिंग टूल** (पेज नं. 25–26) से बच्चों की जाँच कीजिए।
- उन सभी बच्चों को चयनित कीजिए, जो घटाव स्तर से नीचे हैं मतलब जिन्हें घटाव के सवाल हल करने में परेशानी होती है। उन बच्चों को समर कैम्प में शामिल कीजिए।

2

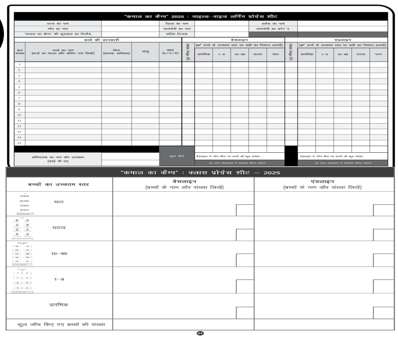

- **लर्निंग प्रोग्रेस शीट** (पेज नं. 27) पर हर एक बच्चे की सामान्य जानकारी के साथ उनके पढ़ने का स्तर भी लिखिए।
- बच्चों की बेसलाइन जाँच के आँकड़ों से भरी **क्लास प्रोग्रेस शीट** (पेज नं. 29) को ऐसी जगह लगाइए जहाँ बच्चों के अलावा सभी उसे आसानी से देख पाएँ।

3

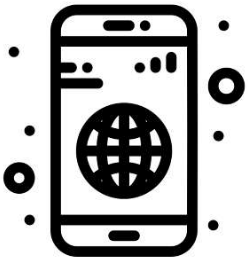

- प्रशिक्षण के दौरान, **वेबलिंक** का उपयोग कीजिए और स्वयं को पंजीकृत कीजिए (क्यूआर कोड को स्कैन करके) और अपना शैक्षिक स्तर, वर्तमान शिक्षा की स्थिति, संसाधन, मोबाईल की जानकारी आदि सामान्य जानकारी भरिए।
- अगले चरण में, **लर्निंग प्रोग्रेस शीट** से लक्षित बच्चों का संकलन (योग) बेसलाइन भरिए।

4

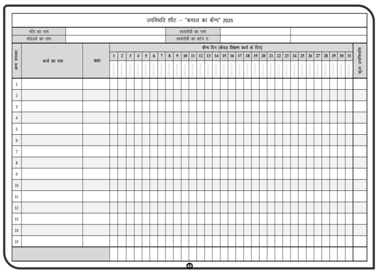

- 'समर कैम्प' अभियान के दौरान पुस्तिका में दी गई **उपस्थिति पत्र** (पेज नं. 28) की मदद से लक्षित बच्चों की उपस्थिति को दर्ज कीजिए।

5

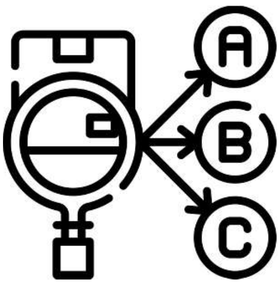

- अभियान के अंतिम चरण में, **टेस्टिंग टूल** पर लक्षित बच्चों का पुनः मूल्यांकन कीजिए, ताकि उनके एंडलाइन लर्निंग लेवल को **लर्निंग प्रोग्रेस शीट** और **क्लास प्रोग्रेस शीट** दोनों में दर्ज किया जा सके ।

6

- दिए गए **वेबलिंक** में वेब फ़ॉर्म पर लक्षित बच्चों की एंडलाइन का संकलन डेटा दर्ज कीजिए। आपके द्वारा समुदाय के बच्चों के सीखने में जो प्रगति हुई है उसका जश्न मनाइए।

निर्देशिका

क्या करना है?

इस कैम्प के अंत तक सभी बच्चे :

- 999 तक की संख्याओं की समझ (स्थानीय मान सहित) बना पाएँगे।
- तीन अंकों की संख्या के जोड़–घटाव के शाब्दिक सवाल हल कर पाएँगे।
- दो अंकों की संख्या का एक अंक से गुणा–भाग के शाब्दिक सवाल हल कर पाएँगे।

कौन करेगा?

- गाँव के कोई दो उत्साही और ऊर्जावान युवा जो कम से कम दसवीं या उससे अधिक पढ़े हों।
- हर दिन कुछ समय के लिए स्मार्टफ़ोन का इस्तेमाल कर सकें।

नोट : बच्चों को कैसे पढ़ाएँ और स्मार्टफ़ोन का इस्तेमाल पूर्ण तरीक़े से कर पाएँ।

किसके साथ?

कक्षा 5 से 6 के ऐसे बच्चे जो गणितीय संख्या और संक्रियाओं की पहचान या घटाव के सवाल नहीं कर पाते हैं।

नोट :
- बच्चों और माता–पिता के साथ चर्चा करके तय कर लीजिए कि एक महीने के लिए हर दिन कैम्प एक निश्चित जगह और समय पर हो।
- गाँव के प्रधान या मुखिया से कहकर निर्धारित स्थान पर एक ब्लैकबोर्ड या दीवार के कुछ हिस्से को काले पेंट से रंग लीजिए।

प्रतिदिन की जाने वाली गतिविधियाँ

1. वार्मअप	10 मिनट
2. खेल एवं गणित सम्बंधी बातचीत	10 मिनट
3. गणित की कहानी सम्बंधित गतिविधियाँ	40 मिनट
4. शाब्दिक सवाल सम्बंधित गतिविधियाँ	15 मिनट
5. माथा–पच्ची	15 मिनट

1. वार्मअप : 10 मिनट

गणित की कक्षा में वॉर्मअप करने से बच्चों में ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है और उनमें उत्साह बना रहता है। बच्चे संख्याओं के साथ मजा लेने लगते हैं। वे कक्षा में होने वाली गतिविधियों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने लगते हैं। वॉर्मअप में खेले जाने वाले खेलों के कुछ उदाहरण निम्न हैं :
बोल भाई कितने, मार छलाँग आदि।

2. खेल एवं गणित सम्बंधी बातचीत : 10 मिनट

गणित सम्बन्धी बातचीत के लिए अलग–अलग विषय पर बातचीत शुरू कीजिए। बच्चों के जवाब और बातचीत को समझते हुए उनसे जानिए, जैसे :
आपके स्कूल में क्या–क्या दिखाई देता है और कैसा? बच्चे एक–एक करके स्कूल के बारे में बताएँगे। अधिकतर बच्चों की बातें सुन लेने के बाद आप जानिए कि स्कूल में कितने कमरे हैं? कमरे के दरवाजे, खिड़कियों का आकार कैसा है? दीवार की ऊँचाई कितनी है? दरवाज़े की लम्बाई और चौड़ाई कितनी है? कुर्सी, टेबल, बेंच–डेस्क, मैदान या खुली जगह, पेड़–पौधे, रसोईघर आदि के बारे में जानिए। बच्चों ने कैसे पता लगाया, इतना ही क्यों, इसको कैसे मापा या तौला जा सकता है आदि की जानकारी भी लीजिए। बातचीत के अंत में बच्चों को बताइए कि आज आपने अपने स्कूल के बारे में कुछ जाना और समझा है।
प्रत्येक दिन अलग–अलग विषय पर बातचीत कीजिए।

3. गणित की कहानी सम्बंधित गतिविधियाँ : 40 मिनट

- कहानी के नाम पर बातचीत कीजिए। जैसे – नाम के अनुसार कहानी क्या होगी?
- मोबाइल पर भेजे गए लिंक पर क्लिक करके यू–ट्यूब पर जाइए ***"कहानी ट्रेन"*** के माध्यम से सभी बच्चों के साथ कहानी सुनिए।
- कहानी सुनने के बाद बातचीत कीजिए। जैसे – कहानी में क्या हुआ? कैसे हुआ? कहानी में क्या पूछा गया है? कहानी में आपको गणित सम्बंधित कौन–सी गतिविधि करनी है और क्यों?
- कहानी से सम्बंधित टास्क पर चर्चा कीजिए और समूह में एक–दूसरे की मदद से हल कीजिए। कहानी आपके इस बुकलेट में भी है।
- कैम्प में सुनी कहानी को बच्चे हर दिन अपने घर में सुनाएँ।

4. गणितीय संक्रियाएँ :

शाब्दिक सवाल

कैंप में शामिल सभी बच्चों के साथ उनकी संख्यात्मक समझ को शाब्दिक सवाल के माध्यम से अवधारणा आधारित गणितीय संक्रियाओं की समझ से जोड़ना आवश्यक है। बच्चे सवाल को समझ सकें और चर्चा करते हुए इस नतीजे पर पहुँचे कि इस सवाल को हल कैसे करना है और ऐसा ही क्यों करना है। बच्चों के साथ शाब्दिक सवालों पर उनके दैनिक अनुभवों से जोड़ते हुए तर्क–वितर्क भी किया जाना ज़रूरी है ताकि उनमें निर्णय लेने की दक्षता में वृद्धि हो और वे सवाल को हल करने की प्रक्रिया को समझ सकें।

सवालों पर बातचीत

रोज़ाना जोड़ या घटाव के कम से कम दो शाब्दिक सवाल पर बातचीत कीजिए।

सवाल को समझने के लिए चार मुद्दों पर चर्चा करना ज़रूरी है :

- सवाल में क्या जानकारी दी गई है?
- सवाल में क्या पूछा गया है?
- हल करने के लिए कौन–सी क्रिया करनी होगी?
- जोड़ +, घटाव – ही क्यों करना है?

क्रिकेट के खेल में एक खिलाड़ी ने 56 रन बनाए। दूसरे खिलाड़ी ने 22 रन बनाए। अभी कुल कितने रन बने?

साधारण जोड़

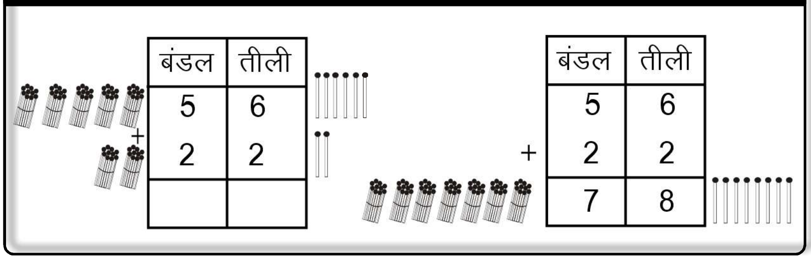

शादी में 37 मेहमान आए थे। खाना खाकर 24 चले गए। अब कितने मेहमान बचे?

साधारण घटाव

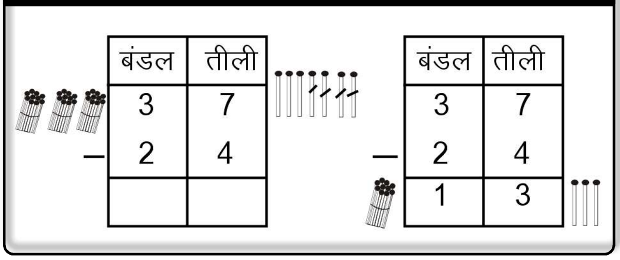

बंडल–तीली से जोड़ : हासिल के साथ

राजू के पास 26 आम है। निशा ने उसे 15 आम और दे दिए तो बताइए कि राजू के पास अब कितने आम हो गए?

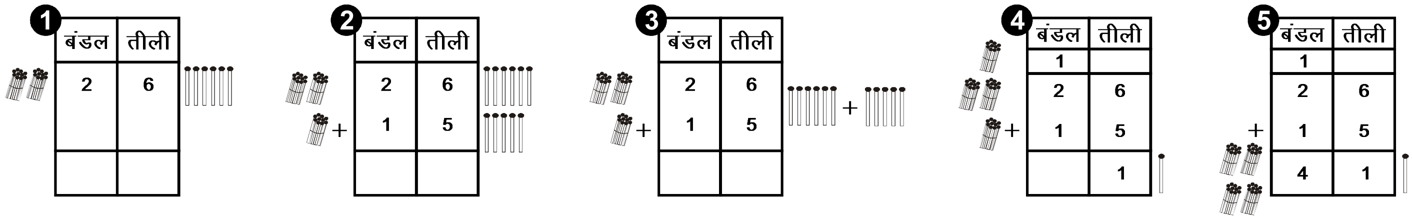

- अँगुली रखकर इस प्रकार पढ़िए – 26 में 15 मिलाया तो 41 हुआ।
- उत्तर को सवाल के साथ मिलाकर पढ़िए और एक वाक्य में उत्तर लिखिए– अब राजू के पास 41 आम हो गए।

बंडल–तीली से घटाना : हासिल के साथ

सूरज के पास 32 लड्डू हैं। उसने 13 लड्डू अपने भाई को दे दिए। अब बताइए सूरज के पास कितने लड्डू बचे?

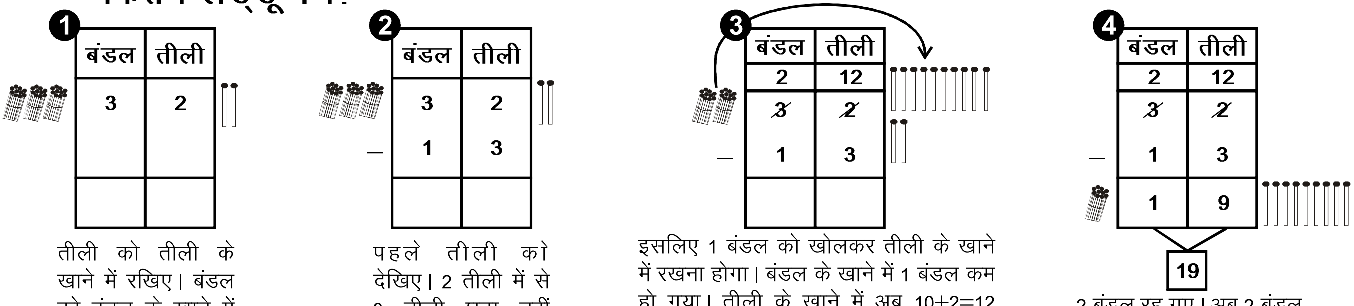

तीली को तीली के खाने में रखिए। बंडल को बंडल के खाने में रखिए।

पहले तीली को देखिए। 2 तीली में से 3 तीली घटा नहीं सकते।

इसलिए 1 बंडल को खोलकर तीली के खाने में रखना होगा। बंडल के खाने में 1 बंडल कम हो गया। तीली के खाने में अब 10+2=12 तीली हो गई। अब 12 में से 9 तीली घटानी है।

2 बंडल रह गए। अब 2 बंडल में से 1 बंडल घटाना है।

- अब अँगुली रखकर इस प्रकार पढ़िए– 32 में से 13 घटाने पर 19 बचा।
- उत्तर को सवाल के साथ मिलाकर पढ़िए और एक वाक्य में उत्तर लिखिए– अब सूरज के पास 19 लड्डू बचे।

गुणा

1. तीलियों द्वारा गुणा की अवधारणा

5–6 बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाइए और प्रत्येक समूह को 12–12 तीलियाँ दीजिए।

प्रत्येक समूह से कहिए कि तीलियों को कुछ समूहों में सजाना है। लेकिन, शर्त यह है कि प्रत्येक समूह में तीलियों की संख्या समान हो।

प्रत्येक समूह से पूछिए, कितने समूह बने और प्रत्येक समूह में कितनी तीलियाँ हैं?

अब बताइए कि किसी समूह में कोई चीज़ जितनी संख्या में रहती है और जितनी बार रहती है उस सम्बंध को गुणा (x) द्वारा दर्शाया जाता है, जैसे –

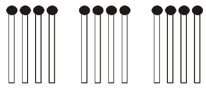

4 के समूह में 3 बार यानी 12

4 x 3 = 12

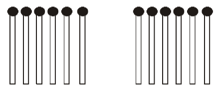

6 के समूह में 2 बार यानी 12

6 x 2 = 12

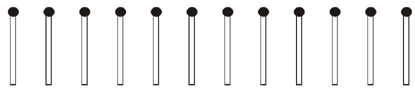

1 के समूह में 12 बार यानी 12

1 x 12 = 12

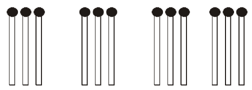

3 के समूह में 4 बार यानी 12

3 x 4 = 12

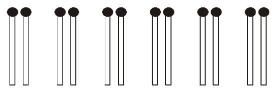

2 के समूह में 6 बार यानी 12

2 x 6 = 12

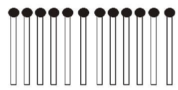

12 के समूह में 1 बार यानी 12

12 x 1 = 12

2.गुणा के शाब्दिक सवाल

गुणा के सवाल हल करते समय ध्यान में रखने वाले मुख्य बिंदु :

- सबसे पहले गुणा के 2–3 मौखिक शाब्दिक सवाल पूछिए।
- सवाल का जवाब क्या होगा, बच्चों को उसका अंदाज़ा लगाने को कहिए और जवाब कैसे निकाला उस पर बच्चों से चर्चा कीजिए।
- जोड़ और घटाव के शाब्दिक सवालों की तरह गुणा के शाब्दिक सवालों को लिखकर प्रश्नों पर चर्चा कीजिए ।
- गुणा के सवाल हल करते समय यह ध्यान में रखिए कि क्या देना है? कितनी बार देना है? इस पर बातचीत ज़रूर कीजिए।

  सभी बच्चों को बताइए कि गुणा का एक नियम है जिसमें सबसे पहले हम इकाई से इकाई की गुणा करते हैं।
- जवाब को फ्रे़म में बोलते हुए लिखिए।

  जवाब मिलने पर अँगुली रखते हुए पढ़कर दिखाइए और एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

एक गेंद की क़ीमत 24 रुपये हैं। सरला को ऐसी 3 गेंद ख़रीदनी हैं। बताइए, सरला दुकानदार को कितने रुपये देगी?

चर्चा कीजिए : सवाल क्या है? सवाल में क्या पूछा गया है? इसके लिए क्या करना होगा?

जोड़/घटाव/गुणा/भाग ही क्यों करना होगा? अब निम्न प्रकार से हल करके दिखाइए।

फ्रे़म में

	दहाई	इकाई
	2	4
x		3
	1	2
+	6	0
	7	2

फ्रे़म से बाहर

1
24
x 3
72

भाग

1. तीलियों द्वारा भाग की अवधारणा

- 5–6 बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाइए और प्रत्येक समूह को 18 तीलियाँ दीजिए।
- प्रत्येक समूह से कहिए, इन तीलियों को कुछ समूहों में बराबर–बराबर बाँटिए और पूछिए कि प्रत्येक को कितनी तीलियाँ मिलीं?
- अब बताइए, समूहों में बराबर–बराबर बाँटने के नियम को भाग (÷) द्वारा दर्शाया जाता है।
  कुल कितनी वस्तुएँ थीं? कितने हिस्से किए? और हर एक के हिस्से में कितनी वस्तुएँ आईं, इस पर चर्चा कीजिए।

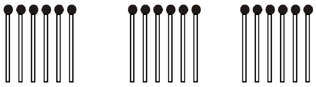

18 तीलियों के 3 समान हिस्से करने पर प्रत्येक हिस्से में 6 तीलियाँ आईं।
18 ÷ 3 = 6

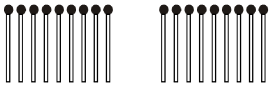

18 तीलियों के 2 समान हिस्से करने पर प्रत्येक हिस्से में 9 तीलियाँ आईं।
18 ÷ 2 = 9

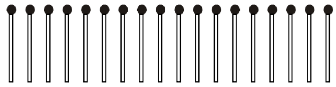

18 तीलियों के 18 समान हिस्से करने पर प्रत्येक हिस्से में 1 तीली आई।
18 ÷ 18 = 1

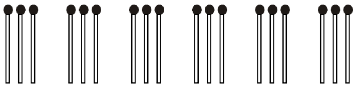

18 तीलियों के 6 समान हिस्से करने पर प्रत्येक हिस्से में 3 तीलियाँ आईं।
18 ÷ 6 = 3

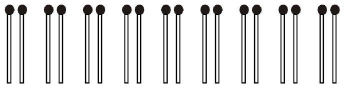

18 तीलियों के 9 समान हिस्से करने पर प्रत्येक हिस्से में 2 तीलियाँ आईं।
18 ÷ 9 = 2

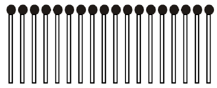

18 तीलियों के 1 समान हिस्सा करने पर प्रत्येक हिस्से में 18 तीलियाँ आईं।
18 ÷ 1 = 18

अतः किसी संख्या का 1 से भाग करने पर उसका मान वही संख्या होती है।

2. दो अंकों का 1 अंक के साथ भाग

24 रुपये 4 लोगों में समान रूप से बाँटने पर हरेक को कितने रुपये मिलेंगे?

स्टेप 1 : 24 रुपये में 10 रुपये वाले और 1 रुपये वाले कितने नोट होंगे?

स्टेप 2 : क्या सभी 4 लोगों को 10 रुपये वाले नोट दे पाएँगे?

स्टेप 3 : तो फिर क्या करेंगे?

स्टेप 4 : हम किसी को 10 रुपये का कोई नोट नहीं दे पाए इसलिए ऊपर शून्य लिखकर नीचे भी शून्य लिखकर घटाते हैं।

स्टेप 5 : क्या हम 10 रुपये के 2 नोट को खुल्ले करके नहीं बाँट सकते?

स्टेप 6 : 10 रुपये के 2 नोट के खुल्ले करने पर हमें 1 रुपये के 20 नोट मिले। लेकिन, हमारे पास पहले से ही 1 रुपये के 4 नोट हैं। अतः अब हमारे पास 1 रुपये के कुल 24 नोट हो गए जिसे 4 लोगों में समान बाँटना है।

स्टेप 7 : 1 रुपये के 24 नोटों को 4 लोगों में बराबर बाँटने पर प्रत्येक को 6 नोट मिले और मेरे पास से 1 रुपये के कुल 24 नोट निकल गए। अतः अब हमारे पास एक भी नोट नहीं बचा।

	दहाई	इकाई
	0	6
4)	2	4
–	0	
	2	4 ← यह 24 इकाई है
–	2	4
	0	0

4 X 1 = 4
4 X 2 = 8
4 X 3 = 12
4 X 4 = 16
4 X 5 = 20
4 X 6 = 24
4 X 7 = 28

इस प्रकार हम देखते हैं कि
24 रुपये को 4 लोगों में समान रूप से बाँटने पर प्रत्येक लोग को 6 रुपये मिले।

5. माथा पच्ची/आज का सवाल : 15 मिनट

- रोज़ाना बच्चों के साथ **"आज का सवाल"** (इसी पुस्तिका में पेज नं. 16–17 देखिए) पर मौखिक रूप से चर्चा कीजिए। जैसे – एक गुल्लक में 65 रुपये थे। दिनेश ने 36 रुपये निकाल लिए तो बताइए अब गुल्लक में कितने रुपये हैं?
- सवाल को ज़ोर से पढ़िए और बच्चों से पूछिए कि सवाल में क्या जानकारी दी गई है?
- सवाल में क्या पूछा गया है?
- सवाल को हल करने के लिए क्या करना होगा?
- जोड़ / घटाव ही क्यों करना होगा?

हर शनिवार

- छोटे–बड़े भाई–बहन, माता–पिता, परिवार और समुदाय के लोगों को बुलाइए।
- सप्ताह में किसी एक मनपसंद कहानी पर रोल प्ले तैयार करने को कहिए। रोल प्ले के लिए संवाद लिखने को कहिए। बच्चों को अभ्यास करने और प्रस्तुत करने को कहिए।
- दीवार पर रस्सी बाँधकर हर कहानी पर बनाए गए चित्र को सजाइए।

नोट : कार्यक्रम के अंत में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों की एक पुस्तिका तैयार कीजिए और उसकी प्रदर्शनी लगाइए।

डिजिटल टास्क

- स्मार्टफ़ोन का इस्तेमाल कर अपना विवरण दर्ज कीजिए।
- जूम/गूगल मीट में प्रतिभाग कीजिए।
- **"कहानी ट्रेन"** के माध्यम से कहानी सुनिए।
- कहानी से सम्बंधित गतिविधियाँ कीजिए।
- जिन अभिभावकों के पास स्मार्टफ़ोन हो उनको कहानी का लिंक भेजिए।
- मज़ेदार गतिविधियों के लिए इसी पुस्तिका (**"आओ खेलिए"** पेज नं. 9–12) देखिए और खेलिए।
- बच्चों के बेसलाइन एवं एंडलाइन आँकड़ों को अपलोड कीजिए।
- जिनके पास स्मार्टफ़ोन नहीं है, वे समुदाय के किसी व्यक्ति/पड़ोसी के स्मार्टफ़ोन से गतिविधियाँ कर सकते हैं।

गृहकार्य : बच्चों से इस पुस्तिका से हर दिन एक सवाल रोज़ उतारने को कहिए। बच्चे सवाल घर ले जाएँ और घर पर पढ़ने और हल करने का अभ्यास करें।

आओ खेलें

गणित के खेल

संख्याओं से खेल

1 ताली–चुटकी

सुनिए और बूझें। एक ताली यानी 10, दो ताली यानी 20 और तीन ताली यानी 30। इसी तरह एक चुटकी यानी 1, दो चुटकी यानी 2। अब मैं ताली और चुटकी बजाऊँगी/बजाऊँगा। आपको ध्यान से सुनना है और कुल संख्या बतानी है। तो शुरू कीजिए?

2 तोड़ो और जोड़ो

अंकों को मज़ेदार चित्रों में भरकर आप बच्चों से उस संख्या को विस्तार से लिखने के लिए कह सकते हैं। लेकिन पहले बच्चे समझ लें कि अंकों को चित्रों में भरना कैसे है। यह क्रिया बच्चे ब्लैकबोर्ड या कॉपी में कर सकते हैं।

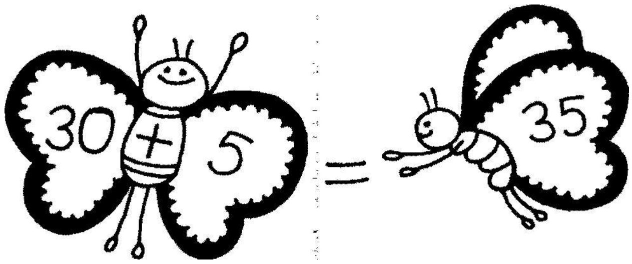

3 रंग–बिरंगे लंबे–चौड़े

सब बच्चे एक घेरा बना लें। उनके बीचों–बीच खड़ा व्यक्ति बोले, जिन बच्चों के पास लाल रंग की कोई चीज़ हो (कपड़ा, रिबन, रुमाल, चप्पल आदि) वे घेरे के बीच में आ जाएँ।। अब इन बच्चों की गिनती करके बोर्ड पर लिखिए। इसी तरह कह सकते हैं : लंबे बालों वाले सभी बच्चे यहाँ बीच में आ जाएँ। उनकी भी गिनती कीजिए। बस इसी प्रकार आप जो चाहें बोलकर इस खेल को आगे बढ़ाएँ।

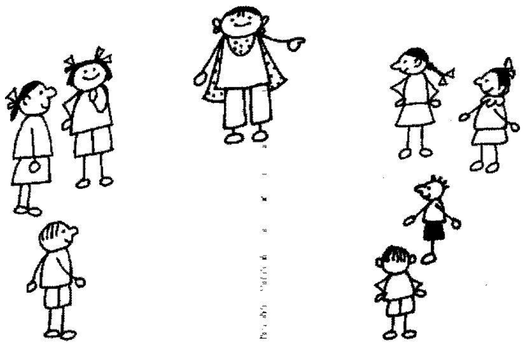

4 नागू नाग

नागू नाग भूखा है। लेकिन वह तो सिर्फ़ अंक खाता है। तो फिर, क्या कीजिए? पहले तो नागू नाग को ज़मीन या ब्लैकबोर्ड पर बना लें। अब बच्चे नागू के पेट में सही स्थान पर अंक भरें। यह खेल ज़मीन, ब्लैकबोर्ड या कॉपी में किया जा सकता है।

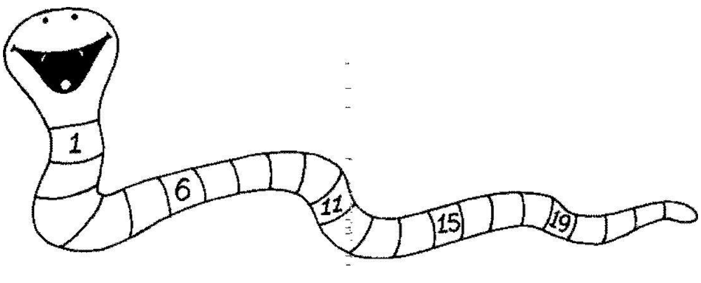

5 संख्या डायरी

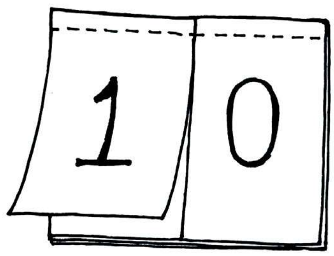

इसमें 2 अंकों तक की संख्या पहचान करने के लिए हमें 0 से 9 तक के अंक के 2 सेट तैयार करने हैं। तैयार करने के बाद उसकी एक डायरी बनानी है। बच्चों को कोई भी 2 अंक की संख्या बतानी है। उसमें से बच्चों को वो संख्या बनाकर दिखानी है। इसमें हम ग्रुप बनाकर बच्चों से प्रतियोगिता भी करा सकते हैं।

आओ खेलें

गणित के खेल

संख्याओं से खेल

1 मार छलाँग !

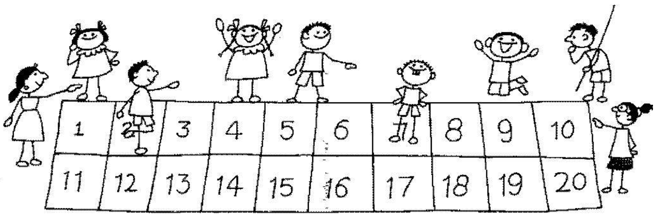

दिए गए चित्र के आधार पर ज़मीन पर एक चित्र बनाइए। आकार के ख़ाली स्थानों में उन अंकों को लिखिए जिन्हें आप बच्चों को सिखाना चाहते हैं। बच्चों को बारी–बारी बुलाएँ। लिखे हुए अंकों में से आप एक अंक बोलें। हर बच्चे को पहले उसी अंक पर कूदना है, ठीक मेंढक की तरह। फिर दूसरा अंक बोलें। अब बच्चे को पहले अंक के स्थान से बोले गए दूसरे अंक पर कूदना है।

2 उल्टी गिनती

सब बच्चे घेरे में बैठें। बारी–बारी ऊँचे स्वर में उल्टी गिनती बोलें। बीस से शुरू कीजिए। पहला बोले बीस, दूसरा बोले उन्नीस, तीसरा अठारह.....। इस तरह से बोलते चलें.....। यह खेल कहीं से भी खेला जा सकता है। छोटी संख्याओं से या बड़ी संख्याओं से।

3 बोल भाई कितने?

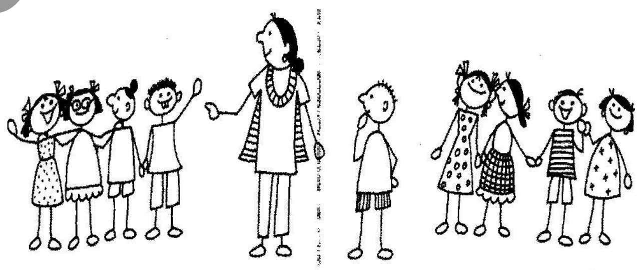

सभी बच्चे एक घेरे में खड़े हो जाएँ। घेरे के बीच कोई भी बच्चा खड़े होकर पूछे, 'बोल भाई कितने'? बाकी बच्चे गोले में चलते हुए जवाब दीजिए, 'आप चाहें जितने'। अगर बीच में खड़ा व्यक्ति कहे 'चार' तो सभी बच्चे झटपट चार–चार के समूह बना लें। जो बच्चे ऐसा नहीं कर पाते, वे खेल से बाहर हो जाएँगे। समूह की संख्या बदलती रहेगी और खेल चलता रहेगा।

4 मामा जी का घर

मैं यहाँ हूँ और वहाँ मामा जी का घर है। मुझे मामा जी के घर जाना है। लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए यहाँ लिखी सभी संख्याओं को छूते हुए जाना है। शर्त यह है कि अगर मैं इन संख्याओं को रेखाओं से जोड़ूँ तो रेखाएँ एक–दूसरे को न छुएँ और न ही काटें। क्या मामा जी के घर पहुँचने में आप मेरी मदद करेंगे? आप चाहें तो इसे ज़मीन या ब्लैकबोर्ड पर बना सकते हैं। अब खेल शुरू कीजिए? इस खेल को आप बड़े अंकों के साथ भी खेल सकते हैं।

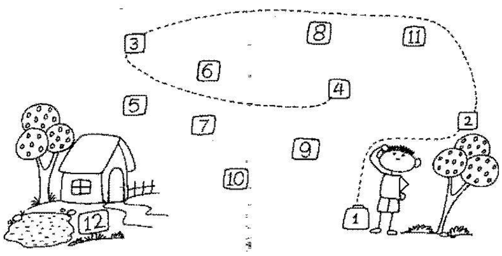

5 पासे का खेल

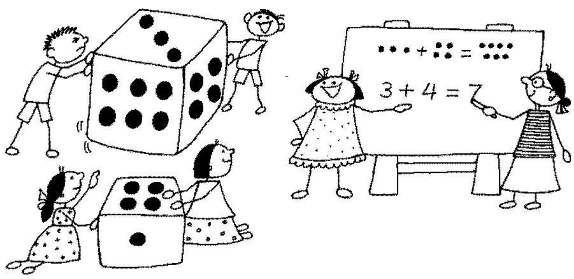

दो पासे चाहिए। बच्चों की दो टीम बनाइए। पहला बच्चा पासे फेंकेगा। दूसरा उन पासों पर आए अंक बोलेगा, जैसे 3,4। तीसरा बच्चा दोनों अंक गिनकर ब्लैकबोर्ड पर लिखेगा। पहली टीम के बच्चे पासे फेंके। पासे पर आए अंक गिनकर बोर्ड पर लिखिए। दूसरी टीम भी वही कीजिए दस बार खेलने के बाद गिनें कि कौन–सी टीम जीत रही है।

गणित के खेल

जोड़ व घटाव

1 गिन–गिन गिनती

गिनती गिनने के बहुत तरीक़े हैं। पहला तरीक़ा – सभी बच्चे एक घेरे में बैठ जाएँ। बारी–बारी गिनती शुरू कीजिए। 1,2,3,4.....बोलते जाएँ। इसी तरह दूसरा तरीक़ा– पहले एक बच्चा बोले 10, अगला 20, तीसरा 30. ...। एक और मज़ेदार तरीक़ा है, पहला बच्चा बोले 1 दूसरा चुप रहे, तीसरा बोले 3, चौथा चुप रहे, पाँचवाँ बोले 5....आदि।

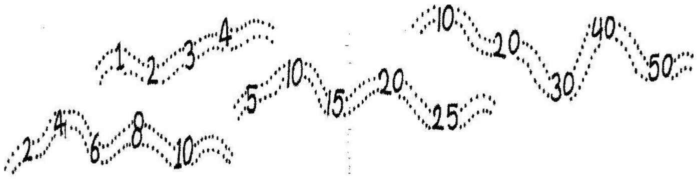

2 गर्म या ठंडा

एक बच्चे को बाहर भेज दीजिए। दूसरे बच्चे के साथ मिलकर कोई भी एक संख्या तय कर लें जैसे 25 पहला बच्चा वापस आता है। उसे बताइए हमने "10 से 30" के बीच में संख्या सोचा है बताइए तो वह क्या है....? पहला बच्चा बताता है 15, तो दूसरा बच्चा कहेगा "ठंडा"। यदि पहला बच्चा बताता है 20 तो दूसरा बच्चा कहेगा "ठंडा–गर्म"। यदि पहला बच्चा बताता है 23 तो दूसरा बच्चा कहेगा 'बहुत गर्म'। यदि पहला बच्चा बताता है 25 तो दूसरा बच्चा कहेगा 'वाह भाई वाह'। है न गर्मागर्म खेल !

3 रोते–रोते, हँसते–हँसते

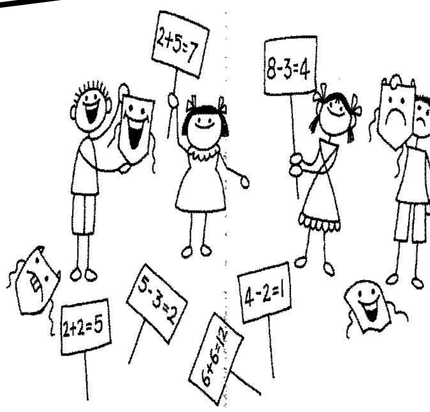

दिए गए उदाहरण के आधार पर ब्लैकबोर्ड पर प्रश्न लिखिए । उदाहरण: 2□ 5□ 7 ख़ाली स्थान पर एक बच्चा चिन्ह भरेगा, जैसे 2 + 5 = 7 बाकी बच्चे कुछ नहीं बोलेंगे पर उनका चेहरा हमें कुछ बताएगा। सही जवाब पर बच्चे मुस्कुराएँगे और ग़लत जवाब पर रोनी सूरत बनाइएगे। हमें चेहरे देखकर समझना है कि जवाब सही है या ग़लत। खेल में उन्ही चिन्हों (+, –, ×, ÷, =) का इस्तेमाल कीजिए जिन्हे बच्चे जानते हों।

4 संख्या चक्र

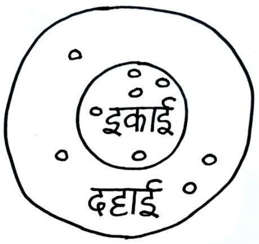

दहाई	इकाई
4	5

45

इस खेल में हम स्थानीय मान की समझ विकसित करने पर ध्यान देते हैं। इसमें जितने अंक तक के स्थानीय मान की समझ करानी है, उतने गोले बढ़ते क्रम में बनाते हैं। कंकड़ या बीज लेकर गोले में फेंकते हैं। प्रत्येक गोले के अंदर आए कंकड़ या बीज को उठाकर उनके स्थानीय मान के अनुसार गिनते हैं और फ्रेम में लिखते हैं।

$45 = (10 \times 4) + (1 \times 5)$
$= 40 + 5$

5 जैसा नाम, वैसा दाम

कुछ अक्षर चुनें और हर अक्षर को एक कीमत दीजिए। अब इन अक्षरों से शब्द बनाइए। बच्चों से कहिए हर अक्षर की कीमत जोड़कर पूरे शब्द की कीमत लिखिए।

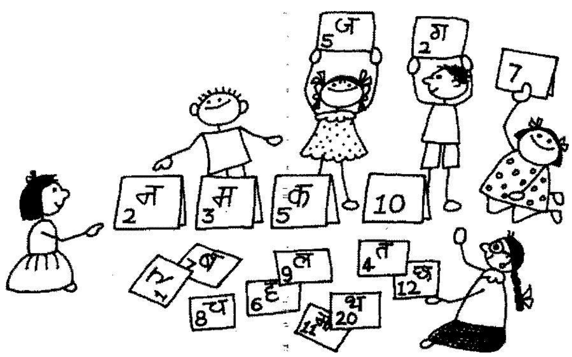

आओ खेलें

गणित के खेल

संख्याओं से संख्याएँ

1 संख्याओं का पिटारा

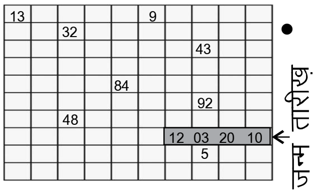

- 10 × 10 की एक तालिका बनाइए। इस तालिका को समूह में मिलकर पूरा कीजिए।
- इस तालिका को पूरा करने के लिए 1 से 100 तक में से अपनी संख्या लिखिए लेकिन कोई भी संख्या को दोहराना नहीं है। कोई भी संख्या कहीं भी लिख सकते हैं। क्रम के अनुसार नहीं लिखनी है।
- तालिका पूरा होने के बाद इसमें संख्याओं को ढूँढें। जैसे– आधार कार्ड नंबर, मोबाई नंबर, जन्म तारीख़।
- इसमें पैटर्न को भी ढूँढें जैसे– 230323 में 3 दाईं तरफ़ से विषम और बाईं तरफ़ से सम स्थान पर है।

2 तीसरा कौन?

एक त्रिकोण बनाइए। कोई भी दो संख्याएँ लिखिए। सबसे बड़ी संख्या ऊपर के कोने में लिखिए। अब पूछिए तीसरा कौन?

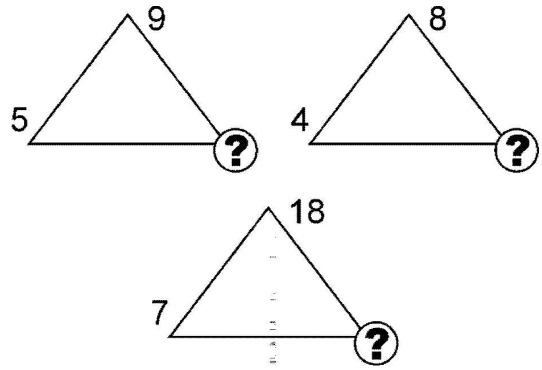

3 कौन बड़ा, कौन छोटा?

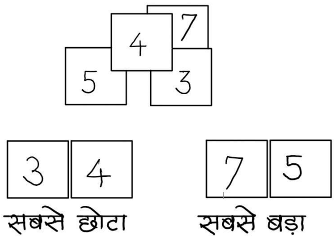

बच्चों को समूह में बाँट दीजिए। हर एक समूह को चार अंक कार्ड दीजिए। अब देखते हैं बड़े–छोटे का कमाल।

पहला खेल : जल्दी से अंक कार्ड को छोटे से बड़े क्रम में सजा लें। देखते हैं कौन–सा समूह इस काम को सबसे पहले कर लेता है?

दूसरा खेल : इन अंक कार्डों से दो अंक वाली सबसे बड़ी कौन–सी संख्या बन सकती है?

फिर सोचते हैं; दो अंक वाली सबसे छोटी कौन–सी संख्या बन सकती है?

4 कैलेंडर से दोस्ती

एक अच्छा रंग–बिरंगा कैलेंडर लगा लें। कुछ सवाल आप बच्चों से पूछिए फिर बच्चे भी एक–दूसरे से सवाल पूछिए।

(1) इस महीने में कौन–कौन सी तारीख़ को शनिवार है?

(2) आपका जन्मदिन कौन–सी तारीख़ को आता है?

(3) इस माह में 24 तारीख़ से पहले कितने शनिवार आ चुके हैं?

इस तरह कई अन्य सवाल तैयार हो सकते हैं।

5 सेंचुरी बनाओ

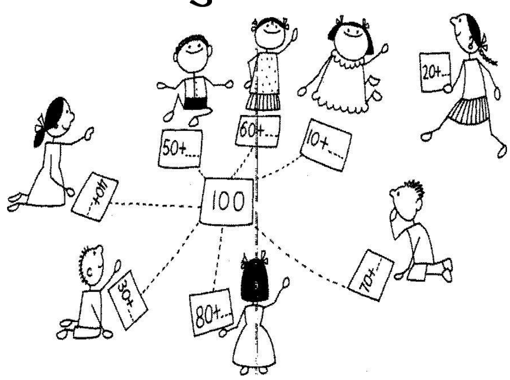

बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बीच में हम 100 लिखेंगे। हर बच्चे को कोई संख्या दीजिए 50,40....। बच्चे को दिए हुए अंक के साथ कोई नया अंक जोड़ना होगा जिससे दोनों संख्याएँ मिलाने से पूरे 100 हो जाएँ।

5

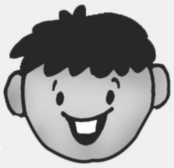

विस्तार सारणी

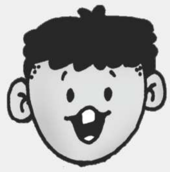
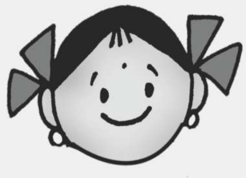

1,00,000	10,000	1,000	100	10	1
2,00,000	20,000	2,000	200	20	2
3,00,000	30,000	3,000	300	30	3
4,00,000	40,000	4,000	400	40	4
5,00,000	50,000	5,000	500	50	5
6,00,000	60,000	6,000	600	60	6
7,00,000	70,000	7,000	700	70	7
8,00,000	80,000	8,000	800	80	8
9,00,000	90,000	9,000	900	90	9

विस्तार सारणी के निर्देश

चार्ट दिखाकर बच्चों से संख्या वाचन करवा लें -
जैसे– 1, 2, 3,......; 100, 200, 300,.....; 1,000, 2,000, 3,000,......; 10,000, 20,000,......; 1,00,000, 2,00,00 .... 9,00,000।

बच्चों से फिर इस तरह पढ़ने को कहें: 1 पर 1 शून्य दस, 2 पर 1 शून्य बीस,......

- 1 पर 2 शून्य सौ, 2 पर 2 शून्य दो सौ,.....
- 1 पर 3 शून्य एक हज़ार, 2 पर 3 शून्य दो हज़ार,......
- 1 पर 4 शून्य दस हज़ार, 2 पर 4 शून्य बीस हज़ार,......
- 1 पर 5 शून्य एक लाख, 2 पर 5 शून्य दो लाख,...... इत्यादि।

चार्ट पर अंगुली रखकर **1000 चार बार लेने से 4,000** होते हैं, यह बच्चों को दिखाएँ। अलग–अलग संख्याएँ लेकर बच्चों से अभ्यास करवाएँ।

दो या तीन बच्चों को बुलाकर विस्तार सारणी के अलग–अलग कॉलम में अंगुली रखने को कहिए। फिर बच्चों से उन संख्याओं को जोड़कर बनने वाली संख्या भी लिखवाएँ।
जैसे– 3000 + 400 + 50 = 3450

संख्या चार्ट

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

1 से 10 तक पहाड़े

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
2	4	6	8	10	12	14	16	18	20
3	6	9	12	15	18	21	24	27	30
4	8	12	16	20	24	28	32	36	40
5	10	15	20	25	30	35	40	45	50
6	12	18	24	30	36	42	48	54	60
7	14	21	28	35	42	49	56	63	70
8	16	24	32	40	48	56	64	72	80
9	18	27	36	45	54	63	72	81	90
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

दिए गए गणितीय माथापच्ची (आज का सवाल) बच्चों को हल करने के लिए दीजिए। इसी तरह के आसान गणितीय माथापच्ची ख़ुद भी सोचकर बनाइए।

घड़ी बजाती टन–टन–टन। समय बताती है हर दम।
चार बजे जब घंटे बजते। सात सेकंड उसी में लगते।
बोलो जब बारह बजते हैं कब तक वे घंटे बजते हैं?

उत्तर – 21 सेकेंड

आप 6 तीली को इस तरह लगाइए कि एक घन बन जाएँ।

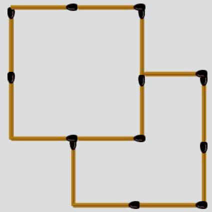

उत्तर– 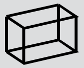

चली एक गाड़ी दिल्ली से आगरा की ओर।
चली दूसरी आगरा से फिर दिल्ली की ओर।
मथुरा में दोनों मिल जातीं, अरे समस्या भारी।
दिल्ली से ज्यादा दूरी पर कौन खड़ी है गाड़ी?

उत्तर – दोनो गाड़ी दिल्ली बराबर दूरी पर खड़ी हैं।

आप 3 तीलियों का स्थान बदलिए और एक जैसे 3 वर्ग पाइए।

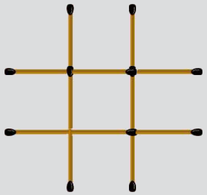

उत्तर– 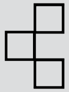

कोई 2 तीली का स्थान बदलिए और 11 वर्ग पाइए।

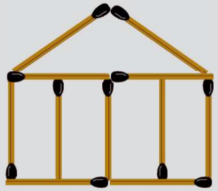

उत्तर– 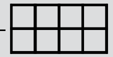

एक रुपये और दस पैसे की इक बोतल और ढक्कन।
बोतल एक अधिक ढक्कन से, इक रुपया कम ढक्कन।
अब ये झटपट बात बताओ, है कितने का ढक्कन ?
सही बताओ तब तुम पाओ झटपट मिश्री मक्खन।

उत्तर– 5 पैसे

आप 2 तीली का स्थान बदलिए और एक–जैसे 4 त्रिभुज पाइए।

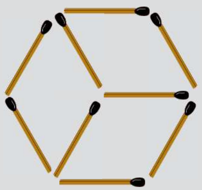

उत्तर– 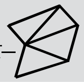

एक खेत ऐसा है भैया, चौड़ा मीटर 3
लम्बाई भी सुनो खेत की, केवल मीटर 3
बाहर–बाहर हर मीटर पर पेड़ लगाएँ
आओ कितने पेड़ लगेंगे, झटपट हमें बताओ।

उत्तर– 12 पेड़

किसी पहाड़ से 100 किलोग्राम वज़न का एक पत्थर गिरा और 5 टुकड़ों में बँट गया। एक दुकानदार ने उन टुकड़ों को बटखड़ा बना लिया। वह उन्हीं 5 टुकड़ों का उपयोग करके 1 किलोग्राम से 100 किलोग्राम तक के वज़न की वस्तु को तौल लेता है। सोचिए और बताइए कि वे 5 टुकड़े कितने–कितने किलोग्राम के हैं?

उत्तर– 1 किलो, 3 किलो, 9 किलो, 27 किलो और 60 किलोग्राम का बटखड़ा।

यहाँ 9 पत्ते दिए गए हैं। इन सभी पत्तों को तीन लाइन में इस प्रकार लगाइए कि हरेक लाइन में 4–4 पत्ते दिखाई दें।

उत्तर–

आपके पास 100 रुपये का एक नोट है। उस नोट को खुल्ला करना है, पर शर्त यह है कि खुल्ला करने के बाद आपके पास 10 नोट हों लेकिन 10 रुपये का एक भी नोट न हों।

उत्तर – 20 रुपये के 4, 5 रुपये के 3, 2 रुपये के 2 और 1 रुपये का एक नोट।

दिए गए चित्र में त्रिभुज के हरेक लाइन में 8 वस्तुएँ हैं और बीच में 3 वस्तुएँ हैं। आप बीच की 3 वस्तुओं को त्रिभुज की लाइन पर इस तरह रखिए कि हरेक लाइन में 8 वस्तुएँ ही दिखाई दें।

उत्तर– 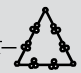

दिए गए शाब्दिक सवाल (आज का सवाल) बच्चों को हल करने के लिए दीजिए। इसी तरह के आसान शाब्दिक सवाल ख़ुद भी सोचकर बनाइए।

दी गई संख्याओं को बढ़ते क्रम में लिखिए।

75, 57, 49, 94, 35, 53 और 89

उत्तर– 35, 49, 53, 57, 75, 89, 94

दी गई संख्याओं को घटते क्रम में लिखिए।

90, 97, 63, 79, 45, 36, 54 और 39

उत्तर– 97, 90, 79, 63, 54, 45, 39, 36

दी गई संख्याओं को एक निश्चित अन्तराल में लिखा गया है किन्तु वे सही क्रम में नहीं हैं, उन्हें सही क्रम में लिखिए।

1, 7, 10, 4, 16, 13, 19

उत्तर– 1, 4, 7, 10, 13, 16, 19

मैं तीन अंकों की छोटी संख्या हूँ जिसमें 2, 4 और 5 से पूरा भाग लग जाता है लेकिन 3 से पूरा भाग नहीं लगता। बताइए, मैं कौन–सी संख्या हूँ?

उत्तर– 100

मैं तीन अलग–अलग अंकों से बनी सबसे बड़ी संख्या हूँ जिसमें 8 से पूरा भाग लग जाता है और शेषफल भी नही बचता है।

उत्तर– 984

मैं तीन अंकों की सबसे छोटी संख्या हूँ जो 4, 8 और 1 से बनी हूँ। बताइए, मैं कौन हूँ?

उत्तर– 148

मैं तीन अंकों की संख्या हूँ जो 3 अंकों की सबसे बड़ी संख्या और सबसे छोटी संख्या का अंतर है।

उत्तर– 899

एक आयताकार हॉल की लम्बाई 8 मीटर और चौड़ाई 6 मीटर है। उस हॉल के फर्श पर टाइल लगानी है। बताइए, 1600 वर्ग सें०मी०की कितनी टाइलें लगाई जा सकती हैं?

उत्तर– 300 टाइल

मैं तीन अंकों की सबसे छोटी संख्या हूँ जिसमें 3 और 7 से पूरा भाग लग जाता है। बताइए, मैं कौन–सी संख्या हूँ?

उत्तर– 105

मैं दो अंकों की सबसे बड़ी संख्या हूँ जिसमें 2, 3 और 6 से पूरा भाग लग जाता है। बताइए, मैं कौन–सी संख्या हूँ?

उत्तर– 96

मैं दो अंकों की सबसे बड़ी संख्या हूँ जिसमें 1, 3, 9, 11, 33 और मुझसे ही पूरा भाग लगता है और किसी से नहीं। बताइए, मैं कौन–सी संख्या हूँ?

उत्तर– 99

एक छोटे मैदान में 4 चक्कर लगाकर 4 कदम आगे बढ़ते ही कोमल 100 मीटर की दौड़ पूरी कर लेती है। बताइए, मैदान का एक चक्कर कितने मीटर के बराबर है?

उत्तर– 24 मीटर

1. आइसक्रीम वाला और मोनी

गली में जैसे ही आइसक्रीम वाले की घंटी बजती, "पों–पों, पों–पों!" मोनी और उसके दोस्त खुशी से उछल पड़ते। वे दौड़कर ठेले के पास आते और अपनी पसंदीदा आइसक्रीम लेने के लिए शोर मचाने लगते। हर कोई अपनी जेब से सिक्के निकालकर आइसक्रीम वाले को देता और आइसक्रीम का मज़ा लेता। लेकिन मोनी अलग थी। वह आइसक्रीम लेती पर कभी पैसे नहीं देती। सभी बच्चों को अटपटा लगता कि आइसक्रीम वाला मोनी को बिना पैसे लिए कभी ऑरेंज, तो कभी चॉकलेट आइसक्रीम पकड़ा देता। एक बार मोनी के दोस्तों से रहा नहीं गया उन्होंने मोनी से पूछा, "आइसक्रीम वाले भैया तुमसे पैसे क्यों नहीं लेते हैं?" मोनी मुस्कराई और बोली, "माँ ने उनसे कहा है कि इसे आइसक्रीम दे दिया करो। पैसे वह एक बार में दे देंगी।" समय बीतता गया। किसी ने इस बारे में दोबारा बात नहीं की। फिर एक दिन, जब महीना पूरा हुआ, आइसक्रीम वाले ने मोनी की माँ से कहा, "मोनी ने जून में 10 कप चॉकलेट और 15 कप ऑरेंज आइसक्रीम खाई है!" मोनी वहीं खड़ी थी, अपनी आइसक्रीम खाते–खाते उसने खुश हो कर कहा, "मम्मी, आइसक्रीम वाले अंकल बहुत अच्छे हैं!" मोनी की माँ मुस्कराते हुए अंदर गई और एक लिफाफा लाकर आइसक्रीम वाले को थमा दिया। आइसक्रीम वाले ने पैसे डब्बे में रखे और ठेला आगे बढ़ा दिया।

अपने समूह में आइसक्रीम वाले और मोनी की बातचीत का आनंद लीजिए और चर्चा कीजिए। फिर अपनी–अपनी कॉपी में सवालों के जवाब लिखिए और एक–दूसरे की कॉपी जाँचिए।

1. मोनी ने जून माह में कितने कप चॉकलेट और ऑरेंज आइसक्रीम खाई?
2. अगर मोनी की माँ आइसक्रीम वाले को एक सप्ताह के हिसाब से पैसे देतीं तो वो कितना देतीं?
3. मोनी की माँ ने आइसक्रीम वाले को कितने रुपये दिए?
4. आपके अनुसार मोनी को इतनी सारी आइसक्रीम खानी चाहिए? सोचिए और जवाब लिख कर घर में सब को पढ़कर सुनाइए।

2. रीना की मजबूरी

गाँव में रीना नाम की एक लड़की रहती थी। उसके पास 8 मुर्गियाँ और 2 बकरियाँ थीं। वह बड़े प्यार से उनकी देखभाल करती थी। रोज़ सुबह उठकर उन्हें देखती तो उसे बहुत अच्छा महसूस होता। एक दिन, रीना की माँ अचानक बीमार पड़ गईं। डॉक्टर को दिखाने और दवाई लाने के लिए पैसों की ज़रूरत थी। लेकिन रीना के पास पैसे नहीं थे। "क्या करूँ? बिना पैसे माँ का इलाज कैसे होगा?" उसके दिमाग में यही चल रहा था। तभी गाँव में एक व्यापारी आया। उसने रीना से कहा, "मुझे 3 मुर्गियों और 1 बकरी की ज़रूरत है। क्या तुम इन्हें बेचना चाहोगी?" सब जानते थे कि रीना को अपने जानवरों से बहुत लगाव था। लेकिन माँ के इलाज के लिए पैसों की भी ज़रूरत थी। उसने थोड़ा सोचा और फिर हिम्मत जुटाकर कीमत बताई : प्रति मुर्गी 200 रुपये और बकरी 5500 रुपये। व्यापारी ने थोड़ा मोलभाव किया, "अगर मैं प्रति मुर्गी 50 रुपये और बकरी 500 रुपये कम दूँ, तो चलेगा?" रीना को इलाज के लिए जल्द से जल्द पैसे चाहिए थे। उसने मन ही मन हिसाब लगाया और हामी भर दी। व्यापारी ने रीना को पैसे दिए और मुर्गियों और बकरी को लेकर चला गया। रीना भी माँ की दवा लेने चली गई। घर पहुँचकर उसने जल्दी से माँ को दवा खिलाई । कुछ ही दिनों में माँ की तबीयत ठीक हो गईं। माँ रीना को गले लगाते हुए बोलीं, "तुमने अपनी सबसे प्यारी चीज़ को बेच कर मेरी जान बचाई है। मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मेरे पास तुम्हारे जैसी बेटी है।" रीना मुस्कुरा दी। उसे अपने उन जानवरों की याद तो आई, लेकिन माँ का स्वस्थ होना उसके लिए सबसे बड़ी खुशी थी।

आप समूह में रीना, उसके प्यारे जानवर और रुपये की ज़रूरत के बारे में चर्चा कीजिए। फिर अपनी–अपनी कॉपी में सवालों के जवाब लिखिए और एक–दूसरे की कॉपी जाँचिए।

1. रीना को 1 बकरी और तीन 3 मुर्गियों को बेचने से कुल कितने रुपये मिले?
2. अगर रीना प्रति मुर्गी 200 रुपये और बकरी 5500 रुपये बेचती तो उसे कितने रुपये मिलते?
3. आप अपने आस–पास के जानवरों और पक्षियों के नाम और उनके पैरों की संख्या गिनकर लिखिए।
4. एक पोस्टर बनाइए, जिसमें रीना अपने जानवरों की देखभाल कर रही हो।

3. सम्मी और उसका डर

सम्मी गाँव में रहती थी। वह बहुत हँसमुख थी। उसे दोस्तों के साथ खेलना बहुत पसंद था। लेकिन एक चीज़ से वह बहुत डरती थी–वज़न तौलना! कुछ महीने पहले अपनी मम्मी के साथ डॉक्टर के पास गई थी। डॉक्टर ने उसका वज़न तौला और मुस्कुराते हुए कहा, "अभी ठीक है, लेकिन ध्यान रखना, होगा, अगर वज़न ज़्यादा बढ़ गया तो परेशानी हो सकती है।" सम्मी डॉक्टर की बात पूरी तरह नहीं समझ पाई। लेकिन उसके दिमाग में यह बात बैठ गई। उसे वज़न तौलना कोई गंभीर बात लगने लगी। तभी से उसने कभी अपना वज़न नहीं तौला। उसे लगा अगर उसका वज़न ज़्यादा हुआ तो लोग उस पर हँसेंगे या कुछ कहेंगे। एक दिन, सम्मी अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी। खेलते–खेलते सभी दोस्त गाँव की दुकान के पास पहुँचे। वहाँ वज़न तौलने वाली एक मशीन रखी थी। राजू उछलकर उस पर चढ़ गया और बोला, "अरे, चलो–चलो! हम सब अपना वज़न तौलते हैं!" सिमरन ने सबसे पहले वज़न किया–35 किलोग्राम। फिर इमरान चढ़ा–40 किलोग्राम। धीरे–धीरे सबने अपना वज़न कर लिया। अब बारी सम्मी की थी। वह पीछे हट गई। "न–नहीं, मुझे नहीं करना," उसने कहा। "अरे, इसमें डरने की क्या बात है!" मोना ने हँसकर पूछा। सम्मी कुछ कह नहीं पाई। उसे डॉक्टर की बात याद आ गई, "ध्यान रखना, ज़्यादा बढ़ गया तो परेशानी हो सकती है!" उसने अपने सभी दोस्तों की ओर देखा। सभी खुद को तौल कर देख रहे थे। सम्मी ने देखा सभी का वज़न अलग–अलग था। कोई हल्का तो कोई भारी। लेकिन किसी ने भी एक दूसरे का मज़ाक़ नहीं उड़ाया। सभी बच्चों ने अपना–अपना वज़न कागज़ में लिखा। सम्मी ने साँस ली और हिम्मत जुटाकर मशीन पर चढ़ गई–30 किलोग्राम। उसके दोस्तों ने ताली बजाई, "अरे वाह! एकदम परफेक्ट!" किसी ने सम्मी का मज़ाक़ नहीं उड़ाया। उसने मन ही मन सोचा, "वज़न तो बस एक संख्या है, इससे डरना क्यों?" उस दिन के बाद, सम्मी को वज़न तौलने से कभी डर नहीं लगा।

अपने समूह में किसी दुकान की तराजू के बारे में चर्चा कीजिए और अपनी–अपनी कॉपी में सवालों के जवाब लिखिए। फिर एक–दूसरे की कॉपी जाँचिए।

1. सिमरन, सम्मी, इमरान, राजू और मोना में से किसका वज़न सबसे अधिक था? लिखिए और बताइए।
2. आप अपने सभी दोस्तों के वज़न का पहले अनुमान लगाइए और उसकी सूची बनाइए।
3. ऐसी 5 चीज़ों के नाम लिखिए जिसका वज़न 10 किलोग्राम से कम हो।
4. अगर आपके पास किलोग्राम नहीं होता तो आप घर के राशन की माप कैसे करते?

4. मैं सबसे मज़बूत हूँ

गाँव के एक स्कूल की दीवार पर कई तरह की आकृतियाँ बनी थीं – त्रिभुज, आयत, वर्ग और गोला। हर आकृति को लगता था कि वह सबसे ख़ास है। लेकिन त्रिभुज को अपने आकार पर सबसे ज़्यादा गर्व था। वह रोज़ अपनी नुकीली भुजाओं को देखकर अक्सर कहता, "मैं सबसे मज़बूत हूँ! मेरे तीन कोण मुझे स्थिर और ताकतवर बनाते हैं। दुनिया की सबसे ऊँची इमारतें, बड़े–बड़े पुल और मज़बूत छतें–सब मेरे बिना अधूरे हैं!" एक दिन, आयत ने उसकी यह बात सुन ली। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "त्रिभुज भाई, तुम खुद को सबसे मज़बूत मानते हो, लेकिन मेरी चार भुजाएँ और चार कोण मुझे और भी स्थिर बनाते हैं। इसलिए खिड़कियाँ, दरवाज़े, बोर्ड, किताबें–सब मेरे ही आकार के हैं!" त्रिभुज हँसा और बोला, "लेकिन तुम आसानी से झुक सकते हो! तुम्हारे किसी कोने को दबाया जाए, तो तुम्हारा आकार बदल सकता है। मगर मैं? मेरी आकृति कभी नहीं बदलती! इसलिए बड़े–बड़े पुल और टावर मेरी ही आकृति में बनाए जाते हैं।" आयत को यह सुनकर थोड़ा अजीब लगा। वर्ग भी बातचीत में शामिल हो गया। वर्ग ने दोनों को समझाते हुए कहा, "तुम दोनों ही बहुत ज़रूरी हो! त्रिभुज, तुम बहुत मज़बूत हो, इसलिए छतों और पुलों के बनने में तुम्हारा इस्तेमाल होता है। लेकिन आयत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है–इमारतों, फर्नीचर और सड़कों पर तो उसी का इस्तेमाल होता है।" यह सुनकर त्रिभुज कुछ सोच मे पड़ गया, "तुम सही कह रहे हो! मैंने कभी यह नहीं सोचा कि हर आकृति की अपनी ही खासियत होती है।" आयत ने भी सहमति में सिर हिलाया, "हाँ, हर आकार की अपनी ताक़त होती है। हम सब अपने–अपने तरीक़े से दुनिया को बेहतर बनाते हैं!" अब त्रिभुज समझ चुका था कि मज़बूती सिर्फ़ ताक़त में नहीं, बल्कि हर चीज़ की अपनी विशेषता में है। हर आकृति की अपनी जगह और महत्त्व होता है और यही उसकी असली ख़ूबसूरती है!

आप अपने समूह में अलग–अलग आकार की वस्तुओं के बारे में बातचीत कीजिए। फिर अपनी–अपनी कॉपी में उत्तर लिखिए और एक–दूसरे की कॉपी जाँचिए।

1. छह तीलियों की मदद से आप अधिक से अधिक कितने त्रिभुज और आयत बना सकते हैं?
2. आपके अनुसार त्रिभुज कौन–कौन सी खासियत से सहमत हुआ?
3. आप के आसपास अलग–अलग आकार की बहुत सारी चीज़ें हैं। उनके आकार के अनुसार उनकी सूची बनाइए।
4. 30 सेंटीमीटर का एक धागा लीजिए और उससे अलग–अलग आकार बनाइए : त्रिभुज, आयात, वर्ग आदि। उनके किनारों को मापिए और लिखिए।
5. **ज़रा सोचिए:** ऐसी आकृतियों के गुण जो ज्ञात नहीं होते।

5. दादी का जन्मदिन

आज का दिन रिया के लिए बहुत खास था। उसकी प्यारी दादी का जन्मदिन जो था! घर में चारों तरफ खुशी का माहौल था। मम्मी–पापा ने पहले ही सजावट और पकवान बनाने की योजना बना ली थी, लेकिन रिया कुछ अलग करना चाहती थी। "मैं दादी के लिए एक स्पेशल केक बनाऊँगी!" उसने अपने दोस्तों को बताया। "केक?" उसके दोस्तों ने हैरत से पूछा। "हाँ! दादी को मीठा बहुत पसंद है!" उसने झटपट रेसिपी की सभी सामग्री लिख ली : 2 कप मैदा, 1 कप चीनी, 1/2 कप तेल और अन्य ज़रूरी चीज़ें। एक दोस्त ने रिया से पूछा, "रिया, तुमने कभी केक बनाया है?" रिया थोड़ा झिझकी, "नहीं, लेकिन मैं इसे अच्छे से बनाऊँगी!" "लेकिन तुम्हें सही मात्रा में सामग्री लेनी होगी, वरना केक खराब हो सकता है," दूसरे दोस्त ने कहा। "हाँ! मैंने सीखा है कि 1 कप मैदा, 250 ग्राम और 1 कप तेल, 240 मिलीलीटर होता है। अगर माप सही होगा, तभी तो केक भी अच्छा बनेगा!" रिया ने कहा। अब रिया ने सभी चीज़ों को मिलाना शुरू किया। उसने मैदा, चीनी, तेल, और बाकी चीज़ों को सही अनुपात में मिलाया और केक टिन में डालकर ओवन में रख दिया। जब केक तैयार हो रहा था तो रिया को थोड़ा डर लग रहा था। "क्या केक सही बनेगा?" लेकिन जैसे ही केक की खुशबू घर में फैली, तो उसका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। कुछ ही देर में केक तैयार हो गया। "वाह! एकदम परफेक्ट!" रिया की खुशी का ठिकाना न था। उसने फटाफट उस पर क्रीम और चॉकलेट से सजावट की और लिखा– "हैप्पी बर्थडे, दादी!" शाम को जब दादी ने केक काटा, तो उनकी आँखें खुशी से चमक उठीं। "यह तो बहुत स्वादिष्ट है! इसे किसने बनाया?" दादी ने पूछा। रिया ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने!" दादी ने उसे गले से लगा लिया और बोलीं, "तुम सच में बहुत समझदार हो गई हो, मेरी रसोई की छोटी शेफ़!"

6. घड़ी और कैलेंडर

दीवार पर टंगा कैलेंडर अक्सर अकेलापन महसूस करता था। उसे लगता था कि घर में कोई उसकी परवाह नहीं करता। लोग बस एक नज़र डालते और फिर उसे भूल जाते। वह अक्सर सोचता, "मेरी ज़िंदगी का क्या मतलब, जब कोई मुझसे बात ही नहीं करता?" एक दिन, किसी ने उसके पास टेबल पर एक घड़ी रख दी। घड़ी टिक–टिक की आवाज़ में पूरे दिन चलती रहती। कैलेंडर को लगा जैसे उसे नया साथी मिल गया। लेकिन कई दिनों तक दोनों ने एक–दूसरे से कोई बात नहीं की । आखिरकार, एक सुबह घड़ी मुस्कराते हुए बोली, "क्यों भई, इतने उदास क्यों दिखते हो?" कैलेंडर गहरी साँस लेते हुए बोला, "क्या बताऊँ, मैं बस एक कोने में टंगा रहता हूँ। कोई मुझसे बात ही नहीं करता, कोई मुझे याद भी नहीं करता।" घड़ी कुछ सोचते हुए बोली, "बस इतनी सी बात? मेरे पास एक आइडिया है, जिससे घर के सभी लोग तुम्हारे दोस्त बन सकते हैं !" "सच, मगर कैसे?" कैलेंडर ने उत्सुकता से पूछा। घड़ी समझाते हुए बोली, "मैं सुबह तेज़ आवाज़ में अलार्म बजाऊँगी। इससे घर के सभी लोग जाग जाएँगे और हमारी ओर आएँगे। तब तुम उनसे मज़ेदार सवाल पूछना!" "सवाल?" कैलेंडर हैरत से बोला। "लेकिन कैसे ?" "जैसे, अगर आज 20 तारीख़ और सोमवार है, तो दो हफ्ते के बाद कौन–सा दिन और कौन–सी तारीख़ होगी? ऐसे सवाल सुनकर सभी तुम्हें ध्यान से देखने लगेंगे !" घड़ी ने समझाया। "अगर ऐसा हुआ, तो सच में सभी मेरे दोस्त बन जाएँगे!" कैलेंडर ने खुशी से ताली बजाई। "बिल्कुल! आज से हम दोनों भी पक्के दोस्त हैं!" अब हर सुबह घड़ी अलार्म बजाती, लोग जागते और कैलेंडर की ओर देखते। वे न सिर्फ तारीखें पूछते, बल्कि अपने ज़रूरी काम भी उस पर लिखने लगे। धीरे–धीरे, कैलेंडर की अहमियत बढ़ गई। अब वह अकेला नहीं था। वह घर के सभी लोगों की यादों और योजनाओं का हिस्सा बन चुका था।

7. समझदारी का स्वाद

आज राहुल को ऑफिस में बहुत काम था। राहुल को दोपहर से ही तेज़ भूख लग रही थी। शाम में घर जाकर बनाने में बहुत समय लगेगा – उसने ऐसा सोचा। भूख से परेशान राहुल ने तय किया, "क्यों ना आज बाहर ही कुछ खा लिया जाए।" वह तेज़ी से बाज़ार की ओर बढ़ा। रास्ते में मिठाइयों की एक मशहूर दुकान थी। वहाँ तरह–तरह की मिठाइयाँ थीं – रसगुल्ले, काजू कतली, पेड़ा, जलेबी और भी कई तरह की मिठाइयाँ। उसने मिठाइयों के दाम देखे–काजू कतली 800 रुपये किलो, रसगुल्ला 500 रुपये किलो, रसमलाई प्रति 50 रुपये, पेड़ा 450 रुपये किलो, और जलेबी 300 रुपये किलो। मिठाई देखकर राहुल का मन ललचाया, उसने सोचा, "क्या सिर्फ़ मिठाई खाने से भूख मिटेगी?" उसने खुद को समझाया और मिठाई की दुकान की बजाय पास के एक अच्छे रेस्टोरेंट में चला गया। वहाँ बैठकर उसने एक स्वादिष्ट थाली ऑर्डर की। थाली दाल, चावल, सब्जी, रोटी और सलाद से सजी थी। खाना खाकर उसका पेट भर गया और शरीर को सही पोषण भी मिला। खाने के बाद उसे कुछ मीठा खाने की इच्छा हुई। वह मिठाई की दुकान पर गया। लेकिन उसने मिठाई की बजाय एक जूस का गिलास लिया। अब वह खुश था।

8. मोती तालाब और हीरा तालाब

विलासपुर गाँव जंगल से सटा हुआ था। गाँव के पास दो बड़े तालाब थे, जो पूरी तरह गोल न होकर आयताकार थे। गाँव वाले एक को हीरा तालाब और दूसरे को मोती तालाब कहते थे। तालाब के पास घनी झाड़ियों में एक खरगोश और एक लोमड़ी रहते थे। वे दोनों गहरे दोस्त थे। वे दोनों रोज़ सुबह अपने–अपने तालाब का एक चक्कर लगाकर भोजन की तलाश करते थे। खरगोश हीरा तालाब का और लोमड़ी मोती तालाब का चक्कर लगाती थी। भोजन मिलने के बाद वे ढेर सारी बातें भी करते थे।

एक दिन लोमड़ी ने कहा, "मुझे लगता है कि मैं रोज़ तुमसे ज़्यादा चलती हूँ!" खरगोश बोला, "अरे नहीं, मैं तुमसे ज़्यादा चलता हूँ!" धीरे–धीरे यह बात बहस में बदल गई। अब दोनों को सच जानना था। वे अपनी समस्या लेकर बंदर चाचा के पास पहुँचे। बंदर चाचा को गणित की अच्छी समझ थी। उन्होंने नापने वाला एक फीता निकाला और बोले, "चिंता मत करो, हम सही गणना करके पता कर लेंगे कि कौन ज़्यादा चलता है!" बंदर चाचा ने दोनों तालाबों की चारों ओर की दूरी यानी परिमाप को नापना शुरू किया। उन्होंने बताया कि :

- हीरा तालाब की लंबाई 25 मीटर और चौड़ाई 20 मीटर है, यानी उसका परिमाप होगा : 2 X (25+20) मीटर = 90 मीटर
- मोती तालाब की लंबाई और चौड़ाई बराबर थी, जिससे वह वर्गाकार निकला और उसका परिमाप : 4 X 20 मीटर = 80 मीटर

अब सबको समझ आ गया था कि खरगोश रोज़ लोमड़ी से 10 मीटर ज़्यादा चलता था! लोमड़ी मुस्कराई और बोली, "वाह! अब तो हमें बहस करने की ज़रूरत नहीं।" अब खरगोश और लोमड़ी पहले से भी अच्छे दोस्त बन गए थे। वे रोज़ अपने–अपने तालाब का चक्कर लगाते और हर दिन नई–नई चीज़ें खोजते रहते।

9. राशन की दुकान

आज भी सरकारी राशन की दुकान यानी कोटा पर बड़ी भीड़ थी। पलक अपने पापा के साथ वहाँ पहुँची। लोग बे–सब्री से अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। लगभग 1 घंटे के बाद पलक के पापा का नंबर आया। उन्होंने तय कोटे के अनुसार चावल और गेहूँ लिया। तौलते समय वज़न भी चेक किया। दोनों ने अनाज को अलग–अलग बोरों में भरकर साइकिल पर लाद लिया। फिर वह घर के लिए रवाना हो गए। घर पहुँचने पर पलक की माँ ने बोरों को साइकिल से उतरने में मदद की। बोरों को उठाते ही वह कुछ चिंतित हो गई। "मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे आज राशन कुछ कम मिला है।" पलक के पापा ने कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है, तौलते समय वज़न तो सही था।" इसी बीच पलक का छोटा भाई खेल कर घर लौट आया। पलक ने तुरंत उसे राशन के सामानों को गिनने के लिए कहा। गणना करने पर पाया गया, परिवार में पाँच सदस्य हैं। प्रति सदस्य को 3 किलो चावल और 2 किलो गेहूँ मिलना चाहिए था। यानी कुल 15 किलो चावल और 10 किलो गेहूँ मिलना चाहिए था। लेकिन जब पलक के पापा ने तराजू से दोबारा वज़न किया तो चावल केवल 12 किलो और गेहूँ 7 किलो निकला। पलक बोली, "पापा हमें 3 किलो चावल और तीन किलो गेहूँ काम मिला है।" पापा को चिंता हुई, "ऐसा नहीं होना चाहिए था मैं तुरंत राशन की दुकान पर जाकर पूछता हूँ।" उन्होंने राशन की दुकान पर जाकर दुकानदार से पूछा भाई साहब, हमारे कोटे में 3 किलो चावल और 3 किलो गेहूँ कम निकला है। "ऐसा हो ही नहीं सकता," दुकानदार मानने को तैयार नहीं था। वह टाल–मटोल करने लगा। लेकिन पलक के पापा ने दृढ़ता से कहा। "मैंने दोबारा तौल कर वज़न किया है।" चावल और गेहूँ दोनों ही कम निकले हैं। फिर उन्होंने दुकान का रजिस्टर देखने की माँग की। तो दुकानदार को अपनी ग़लती माननी पड़ी। "माफ़ कीजिए आज भीड़ ज़्यादा थी। तौलने में शायद ग़लती हो गई होगी।" दुकानदार ने तुरंत बाक़ी का राशन पापा को दे दिया।

10. मामाजी का नया घर

गर्मी की छुट्टियों में मीना अपने मामाजी के गाँव गई। उसके मामाजी एक किसान थे। उनके पास बैलगाड़ी और ट्रैक्टर दोनों थे। लहलहाते खेतों में घूमना मीना को बहुत अच्छा लगता था। वहाँ उसे अपने ममेरे भाई–बहन के साथ खेलने, दौड़ने और पढ़ने–लिखने में भी बहुत मज़ा आता था। हर सुबह मामाजी बच्चों को कभी ट्रैक्टर तो कभी बैलगाड़ी में बैठाकर खेत ले जाते। बच्चों को खेतों की हरियाली और खुली हवा में घूमना बहुत अच्छा लगता था। एक दिन मामाजी चुपचाप बैठे थे। बच्चे उनके पास ही खेल रहे थे। तभी मीना ने पूछा, "क्या हुआ मामाजी? आप उदास लग रहे हैं, हमसे बात भी नहीं कर रहे हैं?" मामाजी ने मुस्कराकर कहा, "मैं सोच रहा हूँ कि अब एक बड़ा और अच्छा घर बना लूँ। एक ऐसा घर जिसमें बड़े–बड़े कमरे हों, रसोईघर हो, टॉयलेट और बाथरूम हों, बच्चों के लिए एक अलग पढ़ने–लिखने का कमरा हो, और बैठने के लिए बड़ा–सा हॉल हो! उसके नक्शे के बारे में ही सोच रहा था।" बच्चे बहुत खुश हुए और बोले, "यह काम तो हम चुटकी में कर सकते हैं!" बच्चों ने आपस में चर्चा की और आधे घंटे में एक काग़ज़ पर पूरा नक्शा बना दिया।

- बैठक के लिए (हॉल) : 20 फुट लंबा और 16 फुट चौड़ा
- रसोईघर : 14 फुट लंबी और 12 फुट चौड़ी
- 4 कमरे : प्रत्येक की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई 12 फुट
- खिड़कियाँ और दरवाज़े : सोच–समझकर लगाए गए
- टाइल्स की माप : कुछ जगहों पर 1 फुट लंबा और 1 फुट चौड़ा, तो कहीं 1 फुट लंबा और 2 फुट चौड़ा की टाइल्स चाहिए थी।

बच्चों ने घर का डिज़ाइन इतना सोच–समझकर बनाया जो मामाजी की उम्मीद से भी बेहतर था! जब मामाजी ने काग़ज़ पर यह नक्शा देखा, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने बच्चों को गले लगा लिया और बोले, "भई तुम सब तो कमाल के इंजीनियर निकले!"

11. हरीपुर गाँव की कहानी

हरिपुर गाँव बड़े लंबे समय से पीने के पानी की समस्या से जूझ रहा था। लोग कुएँ और नहर का पानी पीते थे, जिससे गाँव में अक्सर बीमारियाँ फैल जाती थीं। गाँव की लीडर सुलोचना देवी इस समस्या को लेकर चिंतित थीं। उन्होंने महसूस किया कि गाँव में शुद्ध पानी का इंतज़ाम करना बहुत ज़रूरी है। सुलोचना देवी ने गाँव की एक होशियार लड़की नंदनी को बुलाया और कहा, "हमें ऐसा पानी का टैंक बनाना है, जो कम से कम 5,000 लीटर पीने का पानी जमा कर सके।" नंदनी ने सोच–विचार कर पानी के टैंक का आकार तय किया। उसने अनुमान लगाया कि अगर टैंक की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई सभी 2 मीटर रखी जाए, तो इसका आयतन होगा = 8 घन मीटर (1 घन मीटर = 1,000 लीटर पानी के बराबर होता है, तो 8 घन मीटर यानी 8,000 लीटर पानी स्टोर करने की क्षमता होगी।) इसका मतलब यह था कि टैंक में 5,000 लीटर से भी कहीं अधिक पानी स्टोर हो सकता था। नंदनी ने हिसाब सुलोचना देवी को दिखाया और बताया। उन्हें यह योजना अच्छी लगी और इस प्रकार गाँव में पानी की टंकी बनाने का काम शुरू हो गया। कुछ महीनों बाद, गाँव में एक बड़ा और मज़बूत पानी का टैंक बनकर तैयार हो गया। इसमें साफ पानी के लिए एक विशेष फिल्टर भी लगाया गया, जिससे पानी साफ़ और स्वच्छ हो सके। अब तो हर घर में शुद्ध पेयजल पहुँचने लगा। गाँव के लोग सुलोचना देवी और नंदनी के बहुत आभारी थे। उन्होंने दोनों को धन्यवाद दिया और गाँव में इस बदलाव की धूम–धाम से खुशी मनाई गई।

12. असली जूता नक़ली रुपये

एक आदमी सड़क के किनारे तेज़ी से चल रहा था। अचानक उसका पैर फिसल गया और उसकी चप्पल टूट गई। अब वह परेशान हो गया, क्योंकि बिना चप्पल के चलना मुश्किल था। उसने इधर–उधर नजर दौड़ाई तो उसे जूते–चप्पलों की एक दुकान दिखाई दी। वह दुकान में गया। दुकानदार ने उसे 120 रुपये की चप्पल दिखाई। आदमी को चप्पल पसंद आ गई। उसने 200 रुपये का नोट दुकानदार को दिया। दुकानदार के पास छुट्टे नहीं थे, इसलिए वह बगल की चाय की दुकान पर गया और 200 रुपये के खुले लेकर आया और आदमी को 80 रुपये लौटा दिए। आदमी नई चप्पल पहनकर वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद चाय वाला जूते–चप्पल की दुकान पर आया और बोला, "भाई, यह 200 रुपये का नोट जो तुमने मुझे दिया था, यह तो नक़ली है!" दुकानदार ने नोट को ध्यान से देखा। वह सच में नक़ली नोट था। अब चाय वाला 200 रुपये माँग रहा था। मजबूरी में जूते–चप्पल वाले दुकानदार ने अपनी जेब से 200 रुपये निकाले और चाय वाले को दे दिए। अब दुकानदार के पास उस आदमी के दिए नकली 200 रुपये थे, लेकिन असल में उसने 120 रुपये की चप्पल भी गँवा दी, 80 रुपये नकद आदमी को वापस कर दिए और 200 रुपये अपनी जेब से चाय वाले को लौटा दिए। जूते–चप्पल वाला दुकानदार उदास मन से नकली नोट को देखता रहा।

13. जंगल में पतंगबाज़ी

एक दिन भालू ने जंगल के राजा सिंह से अनुरोध किया कि इस बार जंगल में भी पतंगबाज़ी का त्योहार मनाया जाए। यह ख़बर जंगल में आग की तरह फैल गई। सब उत्साहित थे। हर कोई पतंग उड़ाना चाहता था, लेकिन समस्या यह थी कि पतंगें और डोर लाएगा कौन? शाम को जंगल के सभी जानवरों की बैठक हुई। लोमड़ी ने सुझाव दिया कि भालू को शहर भेजा जाए। राजा सिंह ने हामी भर दी। भालू तैयार हो गया और अगले ही दिन शहर के लिए निकल पड़ा। शहर पहुँचकर उसने कई दुकानों पर पतंगों और डोर के दाम पूछे। आख़िरकार उसे एक दुकान में दाम ठीक–ठाक लगे। उसने 50 बड़ी पतंगें 25 दुक्कल पतंगें और 75 पूंछ वाली पतंगें ख़रीदी। इसके अलावा 200 रुपये की सुतली और मांझा भी ख़रीदा। शाम होने के पहले भालू जंगल लौट आया। पतंगें देखकर सारे जानवर ख़ुशी से उछल पड़े। फिर क्या था सब मिलकर पतंग में डोर बांधने बैठ गए। गाने गाते हंसी मज़ाक करते हुए रात भर अगले दिन की तैयारी चलती रही, "कल पतंगबाज़ी है। हम पतंग उड़ाएँगे। तिल, मूंगफली, गुड़ की चिक्की खायेंगे।" आसमान में हर ओर पतंगें लहराने लगीं। हर तरफ़ उल्लास था, हँसी थी, ठहाके थे और बस यही आवाज़ गूँज रही थी। "काटा, काटा, काटा है भई।" शेर ने अपनी सबसे बड़ी पतंग उड़ाई वह बहुत ख़ुश था और ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने लगा, "देखो मेरी पतंग सबसे ऊँची है।" अचानक बंदर ने उसकी डोर काट दी। शेर की पतंग हवा में लहराते हुए दूर जा गिरी। सभी जानवर हँसने लगे शेर पहले तो नाराज़ हुआ लेकिन फिर ख़ुद भी हँस पड़ा। फिर सियार की पतंग उड़ते–उड़ते एक पेड़ की सबसे ऊंची टहनी में अटक गई। बेचारा सियार, उसे उतारने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगा लेकिन तभी डाल टूट गई और धड़ाम। सियार नीचे गिरा। सब जानवर हँसी से लोट–पोट हो गए। इस तरह जंगल में पहली बार पतंगबाज़ी का त्योहार बड़े धूम–धाम से मनाया गया।

14. समारोह

जंगल में जोर–शोर से बंदर की शादी की तैयारियाँ चल रही थीं। रंग–बिरंगी सजावट की गई। जगह–जगह आम के पत्तों और फूलों की मालाएँ लटकी थीं। ढोल–नगाड़े बज रहे थे। हर कोई उत्साहित था। बंदर ने पूरे जंगल में न्योते भेजे थे, ताकि सभी उसकी शादी में शामिल हों और ख़ुशी मनाएँ। शादी की रस्में शुरू हो गईं। मेंहदी की रस्म के दौरान सभी नाच–गाना कर रहे थे। तभी बाहर से तेज़ शोर आने लगा। जब देखा तो पता चला कि कुछ जानवर गुस्से में थे। भेड़िया गुस्से से बोला, "अरे! हमारे चाचा को क्यों नहीं बुलाया?" हाथी भी भड़क उठा, "और मेरे मामा का क्यों नाम नहीं है? उन्हें भी नहीं बुलाया!" भेड़िए ने धमकी दी, "मैं बंदर को घोड़े पर नहीं बैठने दूँगा!" बंदर बेचारा घबरा गया, "अरे! मैंने तो सभी को न्योता भेजा था!" कौआ तुरंत बोला, "भाई, मैंने भोलू भालू से मिली जानकारी के आधार पर मेहमानों की सूची बनाई थी।" अब सबकी नजरें भालू पर गईं। भालू ने शरमाते हुए अपना मोटा रजिस्टर खोला, कुछ देर तक पन्ने पलटे, फिर धीरे से कौवे के कान में फुसफुसाया, "भाई, गलती से मैंने पुरानी जानकारी दे दी थी... लेकिन कौवा चुप कहाँ रहने वाला था! वह ज़ोर से बोला, "अरे सुनो, भालू ने ही गलत जानकारी दी थी!" सभी भालू की ओर देखने लगे। भालू बोला, "मुझे माफ कर दो, दोस्तों! मेरी भूल की वजह से इतनी बड़ी गड़बड़ हो गई"। फिर क्या था, तोते को सही जानकारी सौंपी गई। तोते ने मेहमानों की सूची देखी और बुलबुल चिड़िया को तुरंत सभी को न्योता देने भेजा गया। बुलबुल ने पंख फैलाए और चहचहाते हुए सारे जंगल में निमंत्रण बाँट दिए। जल्द ही सारे गुस्साए जानवर भी शादी में आ गए। फिर से बैंड–बाजे बजने लगे, बंदर को घोड़े पर बैठाकर बारात निकाली गई, और हँसी–ख़ुशी शादी पूरी हुई। शादी के बाद, जंगल के सभी जानवरों ने मिलकर तय किया कि भविष्य में किसी भी काम में सही जानकारी यानी आँकड़ों का ध्यान रखा जाएगा, ताकि फिर कोई ऐसी गलती न हो!

15. रोटी और रुपये

अंजू, विकास और समीर तीनों अच्छे दोस्त थे। एक दिन वे घूमने निकले। सफ़र लंबा था, इसलिए वे अपने–अपने हिस्से की रोटियाँ साथ ले आए थे। अंजू के पास चार, विकास के पास तीन और समीर के पास पाँच रोटियाँ थीं। दिनभर चलने के बाद तीनों को भूख लगने लगी। वे एक बड़े छायादार पेड़ के नीचे बैठ गए। सभी ने खाने के लिए अपनी–अपनी रोटियाँ निकालीं। वे खाना शुरू ही करने वाले थे कि एक आदमी वहाँ आया। वह बहुत ही थका हुआ और कमजोर दिख रहा था। अंजू ने पूछा, "क्या हुआ चाचा? आप इतने परेशान क्यों लग रहे हैं?" आदमी ने कमजोर आवाज़ में कहा, "बेटा, कई दिनों से कुछ ढंग से खाया नहीं है। बहुत भूख लगी है..." तीनों दोस्तों ने एक–दूसरे की तरफ देखा। बिना कोई बहस किए, तीनों ने अपनी सारी रोटियाँ एक साथ रख दीं। उन्होंने उन रोटियों को चार हिस्सों में बराबर बाँट दिया, ताकि उस भूखे आदमी को भी उनके बराबर भोजन मिल सके। भूखे आदमी ने पेट भरकर खाना खाया। वह बहुत खुश हुआ। उसने सभी को धन्यवाद देते हुए अपनी जेब से तीन रुपये निकालकर तीनों दोस्तों को दे दिए। तीनों दोस्त आँखें फाड़े देखते रह गए। अब समस्या यह थी कि तीन रुपयों को कैसे बाँटें ? विकास ने कहा, "मैंने तीन रोटियाँ दीं, इसलिए मुझे एक रुपया मिलना चाहिए।" अंजू बोली, "लेकिन मैंने चार रोटियाँ दी हैं, तो मुझे ज़्यादा रुपये मिलने चाहिए!" समीर ने तर्क दिया, "मैंने पाँच रोटियाँ दी हैं, तो मेरा हिस्सा सबसे बड़ा होना चाहिए!" इस तरह, उनके बीच बहस छिड़ गई। कोई सही हल नहीं सूझ रहा था। आख़िरकार, वे फैसले के लिए गाँव के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति के पास गए और पूरी कहानी सुनाई। बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "चलो हम भी गिनती करके समझते हैं।"

16. चाँदा

राघव और कबीर के हाथ में चॉक थी। दोनों ने कमरे के चारों कोनों को बाँट रखा था। दो कोनों पर राघव का कब्जा था और दो कोनों पर कबीर का। वे अपने–अपने कोनों के आसपास जमीन पर अलग–अलग आकृतियाँ बना रहे थे और चॉक से लकीरें खींच रहे थे। अचानक राघव ने कहा, "माँ–माँ, मुझे चाँदा चाहिए!" माँ मुस्कराई और बोली, "बेटा, चाँद तो आसमान में होता है। उसे देख सकते हो, मगर छू नहीं सकते।" माँ का जवाब सुनकर कबीर भी बोल पड़ा, "माँ, मुझे भी चाँदा चाहिए!" अब माँ थोड़ा चौंक गईं। दोनों बच्चे हँस रहे थे और बार–बार 'चाँदा दीजिए, चाँदा दीजिए' कह रहे थे। उन्हें कुछ गड़बड़ लगी। माँ उनके पास आकर बोलीं, "बेटा, चाँद का क्या करोगे? तुम तो चॉक से लकीरें खींच रहे हो और चाँद माँग रहे हो!" राघव ने झट से जवाब दिया, "मम्मी, आज कक्षा में हमने चाँदा से कोण को मापना सीखा था। अभी हमने जमीन पर अलग–अलग कोण बनाए हैं और अब हम उन्हें चाँदा से मापकर देखना चाहते हैं!" कबीर ने जोड़ा, "आपको पता है, चाँदा द्वारा मापे गए कोणों का माप अंश या डिग्री में होता है।" माँ हँस पड़ीं और सिर पर हाथ मारकर बोलीं, "ओहो! तो तुम लोग चाँद की नहीं, चाँदा की बात कर रहे थे!" माँ ने उन्हें चाँदा यानी प्रोट्रैक्टर दिया। अब दोनों अपने–अपने बनाए गए कोणों को मापकर उनकी तुलना करने लग गए।

17. हाथ और नाप

राजा सत्यनाप के दरबार में आज ख़ूब हंगामा मचा हुआ था। किसान धरमपाल और दुकानदार नापसुख के बीच गरमागरम बहस चल रही थी। दोनों अपनी–अपनी बात पर अड़े हुए थे। दरबार के बाकी लोग तमाशा देख रहे थे। तभी राजा सत्यनाप के आने की आहट हुई। पूरा दरबार शांत हो गया। राजा ने भौंहें चढ़ाते हुए मंत्री नीतिदीप से पूछा, "क्या मामला है? यह शोरगुल क्यों हो रहा है?" मंत्री ने सिर झुकाकर कहा, "महाराज, क्यों न धरमपाल और नापसुख से ही पूछ लिया जाए?" राजा ने इशारा किया, तो धरमपाल तुरंत बोल उठा, "महाराज! कल मैंने अपनी बेटी को कुरते का कपड़ा खरीदने नापसुख की दुकान पर भेजा था। मैंने पाँच हाथ कपड़ा मँगवाया, लेकिन नापसुख ने केवल साढ़े चार हाथ कपड़ा दिया!" नापसुख ने सफाई दी, "महाराज, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने ठीक पाँच हाथ कपड़ा नापकर दिया था। मेरी कोई गलती नहीं है!" राजा ने मंत्री से विचार–विमर्श किया और तुरंत उस कपड़े के टुकड़े को दरबार में मँगवाने का आदेश दिया। फिर उन्होंने दोनों से कहा कि वे अपनी–अपनी तरह से कपड़े को नापकर दिखाइए। पहले नापसुख ने कपड़े को अपने हाथ से नापा। उसने पाँच बार हाथ रखा, और कपड़ा सही निकला। यह देखकर राजा ने धरमपाल से कहा, "अच्छा, अब तुम नापकर दिखाओ।" धरमपाल ने कपड़ा नापा, वह केवल साढ़े चार हाथ का निकला! अब दरबार में फुसफुसाहट होने लगी। मंत्री नीतिदीप मुस्कराए और बोले, "महाराज, असली समस्या झूठ बोलने की नहीं, बल्कि नापने के तरीके की है। धरमपाल का हाथ नापसुख के हाथ से काफी लंबा है। इसलिए जो कपड़ा नापसुख के लिए पाँच हाथ था, वहीं धरमपाल के लिए छोटा पड़ गया!" राजा को बात समझ में आ गई। उन्होंने गहरी सोच के बाद सिर हिलाया और बोले, "अगर हर किसी के हाथ का नाप अलग होगा, तो हर बार झगड़ा होता रहेगा। हमें एक ऐसा तरीक़ा चाहिए, जिसमें सबके लिए नाप एक जैसा हो।" मंत्री नीतिदीप ने विचार के बाद समाधान सुझाया, "महाराज, क्यों न राज्यभर में नापने के लिए एक समान माप रखा जाए?" राजा को यह सुझाव पसंद आया। उसके बाद से पूरे राज्य के सभी लोगों को सही माप मिल गया।

18. बराबर–बराबर

शेरपुर गाँव में हरिया नाम का एक किसान रहता था। उसने खेती के साथ–साथ दूध की डेयरी भी खोल रखी थी। उसके पास 4 भैंसे थीं। हरिया अपनी भैंसों का बहुत ख़्याल रखता था और यह भी जानता था कि कौन–सी भैंस कितने लीटर दूध देती है। अपनी सुविधा के लिए हरिया ने भैंसों के गले में पट्टियाँ बाँध रखी थीं।

4 लीटर दूध देने वाली भैंस के गले में 4 नंबर की पट्टी।

6 लीटर वाली के गले में 6 नंबर की पट्टी।

8 लीटर वाली के गले में 8 नंबर की पट्टी।

10 लीटर दूध देने वाली भैंस के गले में 10 नंबर की पट्टी थी।

इस अनोखे तरीक़े से उसे कभी भी दूध के हिसाब में कोई गड़बड़ी नहीं होती थी। हरिया की डेयरी की चर्चा दूर–दूर तक थी। समय बीतने के साथ हरिया बूढ़ा हो चला था। अब उसने भैंसों को बेचने का फैसला किया। एक दिन 2 व्यापारी हरिया के पास आए और उसकी 8 भैंसें ख़रीदकर अपने शहर की ओर रवाना हो गए। रास्ते में एक व्यापारी ने चिंता जताई, "हम इन भैंसों का बँटवारा कैसे करेंगे?" दूसरा व्यापारी बोला, "हम इन्हें आपस में बराबर–बराबर बाँट लेंगे।"

पहले व्यापारी ने माथे पर परेशानी की शिकन डालते हुए कहा, "नहीं, ऐसा करने से भले ही भैंसें बराबर हो जाएँ, लेकिन दूध की मात्रा अलग–अलग हो जाएगी। हमें ऐसा बँटवारा करना होगा कि हर व्यापारी को बराबर संख्या में भैंसें भी मिले और दूध की मात्रा भी समान हो।" तभी दूसरे व्यापारी ने कहा, "मुझे बँटवारे का सही तरीक़ा मिल गया!"

19. अंकों का खेल

बहुत समय पहले की बात है। तब गिनती केवल एक से नौ तक ही हुआ करती थी। एक दिन उनमें खूब बहस हुई। दो, चार, छह, आठ अलग हो गए। एक, तीन, पाँच, सात और नौ हैरान थे। अंक एक, सबको समझाते हुए बोला, "मेलजोल में ही ताकत है।" आठ ने तुनक कर बोला, "हमारा जोड़ बढ़िया है। हम हिसाब में भी आसान हैं। दो, चार, छह, आठ। तुम सब बेमेल हो। विषम हो। हम सम हैं।" तीन ने अपना पक्ष सामने रखा, ''हम संख्या में पाँच हैं। तुम चार हो।" चार ने तुरंत हिसाब लगाया, "दो, चार, छह, आठ।" सात बोला, ''गिन लिया? हमारा जोड़ पच्चीस है। तुम सारे अपनों को जोड़ो तो।" आठ ने जोड़ा, "दो, चार, छह और आठ मिलाकर हुए, बीस। अरे!" अचानक नौ कहने लगा, " यदि मैं तुम सम संख्याओं में मिल जाऊँ तो तुम्हारा जोड़ उनतीस हो जाएगा। इस तरह मेरे साथियों का जोड़ सोलह ही रह जाएगा। हा...हा...हा...।" आठ ने नौ से कहा, "घमण्ड मत करो। माना तुम हम सबसे बड़े हो। अगर हम ही न होते तो तुम अकेले क्या कर लेते। हम हैं तो तुम बड़े हो।" एक बोला, "आठ ने सही कहा। हमें छोटे–बड़े और सम–विषम के फेर में नहीं पड़ना चाहिए।" नौ ने एक से कहा, "छोटे होकर जुबान चलाते हो? मैं सबसे बड़ा हूँ। मैं तुमसे तो नौ गुना बड़ा हूँ। क्या समझे?" एक को न जाने क्या सूझा। उसने अपने दायीं ओर एक गोल पत्थर रख लिया। नौ ने पूछा, "ये क्या है?" एक ने कहा, "ये नया अंक है। इसे हम शून्य कहेंगे। शून्य यानी जीरो। अब मैं एक नहीं दस हो गया हूँ। दस यानी एक दहाई। तुमसे भी एक कदम आगे। कुछ समझे?" सभी अंक घबरा गए। सभी एक से मिल गए। नौ अकेला रह गया। फिर वह भी सबके साथ हो लिया। अब गिनती नौ से आगे बढ़ गई। दस, ग्यारह, बारह,...सौ...एक हजार एक....दस हजार एक.....एक लाख एक....। तब से गिनती आगे बढ़ती ही जा रही है।

20. ताल के फूल

नीमखेड़ा गाँव में सुबह से ही चहल–पहल थी। कोई सड़क की सफ़ाई कर रहा था, तो कोई मैदान की। लोग आपस में बातें कर रहे थे, लेकिन बच्चों को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर गाँव में क्या खास हो रहा है! रवि, रेशमा, रानी और मुश्ताक ने आपस में बातचीत की, "क्या हो सकता है?" तभी उन्हें रेशमा की अम्मी दिखीं। सभी उनके पास दौड़कर गए और पूछा, "अम्मी, आज गाँव में इतनी हलचल क्यों है?" अम्मी मुस्कराईं और उन्होंने कहा, "आज मैदान में एक प्रतियोगिता होने वाली है! जो जीतेगा, उसे इनाम भी मिलेगा! और सबसे अच्छी बात ये है कि इसमें कोई भी भाग ले सकता है।" "वाह! फिर तो हमें भी भाग लेना चाहिए!" रेशमा उत्साह से बोली। बाकी दोस्तों ने भी हाँ में सिर हिला दिया। कुछ समय बाद, गाँव के लोग मैदान में इकट्ठा होने लगे। बच्चों के साथ उनके माता–पिता भी पहुँचे। माहौल रोमांचक था। मंच पर गाँव के बुजुर्ग खड़े हुए और घोषणा की, "प्रतियोगिता का सवाल ध्यान से सुनो! एक ताल में जादुई फूल खिलते हैं, और हर दिन पहले दिन के मुकाबले दूने हो जाते हैं। अगर ताल बारहवें दिन फूलों से पूरा भर जाता है, तो बताओ, कितने दिन में वह एक–चौथाई भरेगा?" बच्चे पहेली सुनते ही सोच में पड़ गए। रेशमा माथे पर हाथ रखकर बोली, "फूल हर दिन दुगुने होते हैं... मतलब अगर बारहवें दिन ताल पूरा भरा, तो एक दिन पहले आधा रहा होगा, और उससे एक दिन पहले?" रवि उछल पड़ा, "अरे! समझ गया! अगर बारहवें दिन पूरा भरा, तो ग्यारहवें दिन आधा और दसवें दिन उसका आधा यानी एक–चौथाई!" "तो सही उत्तर है–दसवाँ दिन!" रवि ने जोश में कहा। बच्चों को अपने उत्तर पर पूरा यक़ीन था। अब बस इंतज़ार था, मंच पर जाने का और इनाम पाने का!

21. सूझबूझ

किसी एक शहर में हर रात किसी ना किसी घर में चोरी हो रही थी। लोग डर और गुस्से में थे। बात सेनापति तक पहुँची। उन्होंने तुरंत अपने सिपाहियों को चौकन्ना कर दिया। शहर के कोने में पहरे पर सिपाहियों को लगा दिया गया। "अब देखता हूँ ये चोर कैसे बचते हैं?" सेनापति ने सख्ती से कहा। एक रात जब शहर के लोग गहरी नींद में सो रहे थे। चोर दबे पाँव शहर की सीमा से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन तभी एक सिपाही की नजर चोरों पर पड़ गई। उसने बिना समय गवाए अपने जासूस के द्वारा सेनापति को सूचित कर दिया। सेनापति को जैसे ही खबर मिली, वो झटपट अपने सिपाहियों के साथ वहाँ पहुँच गए। चोरों को चारों ओर से घेर लिया। चोरों को भागने का कोई रास्ता नहीं मिला। वो हताश होकर, हाथ जोड़कर बोले, "हुजूर हमें छोड दीजिए, हम दोबारा चोरी नहीं करेंगे।" सेनापति कुछ देर तक गंभीर मुद्रा में सोचते रहे। फिर बोले, "ठीक है, मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ। लेकिन एक शर्त है।" चोरों ने राहत की सांस ली और एक साथ बोले, "बताइए हुजूर, हम आपकी सारी शर्त मानेंगे।" सेनापति ने कहा, "तुम सभी लाइनों में इस तरह खड़े हो जाओ कि सभी लाइनों में तुम्हारी संख्या बराबर हो और तुम में से कोई भी अकेला न बचे।" चोरों को शर्त आसान लगी। उन्होंने झटपट दो–दो की लाइन बना ली। लेकिन एक चोर बच गया. "अरे, ये क्या?" चोरों में फुसफुसाहट हुई, उन्होंने तीन–तीन की लाइन बनाई, फिर भी एक चोर बच गया। अब उन्होंने चार–चार की लाइन बनाई। फिर वही हुआ। अब चोरों की हालत खराब हो गई, उनके पसीने छूट गए। बार–बार कोशिश के बावजूद, एक चोर बच ही जाता। सेनापति चुपचाप खड़े ये तमाशा देख रहे थे। आखिरकार, बहुत देर की माथा पच्ची के बाद चोरों ने पाँच–पाँच की लाइन बनाई। "अरे वाह, अब सभी बराबर हैं।" चोर खुशी से उछल पड़े। सेनापति मुस्कुराए और बोले, "देखा, गणित का सही उपयोग करने से समस्या का हल निकल ही गया।" इसके बाद उन्होंने चोरों का लूटा हुआ सामान जब्त किया और चेतावनी देते हुए कहा, "अगर शहर में दोबारा चोरी करते दिखाई दिए, तो बचने का कोई उपाय नहीं होगा।" सारे चोर सिर झुका कर एक साथ बोले, "साहब, अब कभी चोरी नहीं करेंगे।" फिर वह वहाँ से नौ, दो, ग्यारह हो गए।

22. दूध की हाँडी

उस समय की बात है जब मिट्टी के बर्तनों का ज़्यादातर इस्तेमाल होता था। हमारे घर के आंगन में दादी मिट्टी के चूल्हे पर मिट्टी की हांडी यानी धोनी में दूध उबालतीं और रख देतीं। सुबह उसमें कुछ दूध कम मिलता। "अरे, रोज़ाना यह दूध कम कैसे हो जाता है?" दादी सोचतीं पहले उन्हें लगा की बिल्ली दूध पी जाती होगी लेकिन फिर ध्यान आया कि अगर दूध बिल्ली पीती तो हांडी गिरा देती और मलाई भी चट कर जाती मगर मलाई तो जसकि–तस जमी रहती है। अब दादी की परेशानी और बढ़ गई। आख़िर दूध जाता कहाँ है? उन्होंने सोचा, "एक दिन दादी ने दूध के पास ही लेट कर सोने का नाटक किया।" थोड़ी देर में भैया चुपके से आए, "भैया ने हांडी में पपीते की नली यानी पोंगड़ी डाली और धीरे–धीरे दूध पीने लगे। दादी की आंखें आश्चर्य से फैल गई।" उन्होंने झट भैया का हाथ पकड़ लिया। "ओह, तो यह कारनामा तुम्हारा है।" दादी बोली "भैया शरमा गए, उन्होंने सिर झुका लिया।" "अच्छा यह बताओ दूध थोड़ा ही क्यों पीते थे?" दादी ने पूछा, "भैया ने मासूमियत से जवाब दिया, ताकि और लोगों के लिए भी कुछ बचा रहे और आपको पता भी ना चले।" यह सुनकर दादी को गुस्सा नहीं आया बल्कि हँसी आ गई। भैया की चालाकी और सोच दोनों ने उन्हें चौंका दिया। "चलो तुम्हारा गणित और समझदारी तो अच्छी है अब मेरे एक सवाल का जवाब दो। जवाब सही मिल गया तो तुम्हें माफ़ कर दूंगी," दादी ने कहा। भैया ने झट से हामीं भर दी। सवाल यह है, दादी बोलीं, "अगर तुम्हारे पास 3 हाँडियाँ हों। एक हाँडी 3 लीटर की दूसरी हाँडी 5 लीटर की और तीसरी 10 लीटर की और इनका इस्तेमाल करके तुम्हें मुझे ठीक 1 लीटर दूध निकाल कर देना हो तो तुम क्या करोगे?" भैया सोच में पड़ गए। दूध और हाँडियों में बदलाव किया। देर तक माथा–पच्ची करने के बाद आख़िरकार उन्होंने 1 लीटर दूध निकाल कर देने का तरीक़ा बता दिया। दादी बहुत ख़ुश हुईं, "उन्होंने कहा अब अगर दूध पीना है तो चोरी से नहीं बल्कि बता कर पीना।"

23. बिल्लू की मेहनत

गाँव के किनारे एक पुराना विशाल खजूर का पेड़ था। उस पेड़ की ऊँचाई और रहस्यमयी कहानियाँ मशहूर थीं। कहा जाता था कि उसकी सबसे उँची चोटी पर एक सुनहरी कटोरी रखी है जो हर रात अपने आप मीठे और ठंडे दूध से भर जाती है। हलांकि कई जानवरों ने उस तक पहुँचने की पूरी कोशिश की थी लेकिन कोई भी अब तक सफल नहीं हुआ था। गाँव में रहने वाला नटखट और जिग्यासू बिल्लू इस कहानी को सुनकर रोमांचित हो उठा। वो दूध का बहुत शौकीन था और मन ही मन ठान चुका था, "मैं इस पेड़ पर चढ़ूँगा और कटोरी में रखा स्वादिष्ट दूध ज़रूर पीयूँगा।" एक रात चाँद की हल्की रोशनी पेड़ पर पड़ रही थी। गाँव के बाकी जानवर गहरी नींद में थे। बिल्लू ने अपनी चढ़ाई शुरू की। उसने अपने पंजे मज़बूत किए, गहरी साँस ली और उपर चढ़ने लगा। मगर यह आसान नहीं था। खजूर का पेड़ फिसलन भरा था। जैसे ही वो तीन फीट उपर चढ़ता, उसकी पकड़ ढ़ीली हो जाती और वो दो फीट नीचे फिसल जाता। "ऊपर पहुँचना इतना मुश्किल होगा, ये तो मैंने सोचा भी नहीं था," बिल्लू ने मन में कहा, मगर उसने हार नहीं मानी। वो चढ़ता, फिसलता और फिर कोशिश करता। हर बार जब उसका शरीर थकान महसूस करता, उसकी आखों के सामने सुनहरी कटोरी में भरा मीठा दूध चमक उठता और उसकी हिम्मत फिर से जाग उठती। धीरे–धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। कई घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद बिल्लू ने आखिरकार उस कटोरी तक पहुँचने में सफलता पा ली। कटोरी देखकर उसकी आखें खुशी से चमक उठीं। जैसे ही उसने दूध चखा, उसकी मिठास और ठंडक ने उसकी सारी थकान मिटा दी। ये वैसा ही है जैसा उसने हमेशा सपनों में सोचा था। स्वादिष्ट, ताजा और जादुई। दूध पीने के बाद बिल्लू ने नीचे उतरने की कोशिश की, लेकिन अब उसे डर लग रहा था। उपर चढ़ना जितना कठिन था, नीचे उतरना उससे भी ज़्यादा मुश्किल था। मगर उसने धैर्य रखा और धीरे–धीरे उतरता गया और ज़मीन पर पहुँच गया।

24. फलों का बँटवारा

गाँव के पास एक छोटा–सा जंगल था। उसमें तरह–तरह के फलों के पेड़ थे। जंगल में हाथी, बंदर और गिलहरी भी रहते थे। तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे। एक दिन फल खाने को लेकर तीनों में बहस होने लगी। हाथी बोला, "यह पेड़ मेरा है। इस पेड़ के सारे फल मैं खाऊँगा।" बंदर ने कहा, "नहीं, नहीं! यह मेरा है, इसके सारे फल मैं खाऊँगा।" गिलहरी बोली, "इस पेड़ पर तो मैं रहती हूँ। इसलिए, इस पर मेरा हक है।" फलों को लेकर तीनों में बहस होने लगी। वे तीनों फैसले के लिए लोमड़ी के पास पहुँचे। बंदर बोला, "लोमड़ी बहन, हमारी मदद कीजिए। हम तीनों इस पेड़ को अपना मानते हैं, पर यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि इसका सही हकदार कौन है?" लोमड़ी ने सोचा और कहा, "इसका हल बहुत आसान है। जंगल के सभी फल जंगल वासियों के हैं और इनका सही उपयोग तभी होगा जब वे सभी तक पहुँचे। मैं तुम्हें एक काम देती हूँ। अगर तुम तीनों इसे पूरा कर सकोगे, तो फलों का सही बँटवारा हो जाएगा।" तीनों ने उत्सुकता से पूछा, "कैसा काम?" लोमड़ी ने कहा, "तुम्हें जंगल में घूमकर उन प्राणियों की गिनती करनी होगी, जो इन फलों को खाते हैं। जो सबसे सही संख्या बताएगा, वही यह तय करने में मदद करेगा कि फल कैसे बाँटे जाएँ।" तीनों ने पूरे दिन मेहनत की और जंगल में घूमकर जानकारी इकट्ठा की। अंत में, जब वे लोमड़ी के पास लौटे, तो गिलहरी ने सबसे सटीक गिनती बताई। लोमड़ी ने फैसला सुनाया, "गिलहरी फल बाँटने की जिम्मेदारी निभाएगी। लेकिन यह फल सिर्फ तुम तीनों के नहीं हैं, इन्हें जंगल के बाकी प्राणियों के साथ भी साझा करना होगा।"

तीनों लोमड़ी के फैसले से संतुष्ट हो गए।

गणित की जाँच SAMPLE (1)

अंक पहचान 1-9		संख्या पहचान 11-99		घटाव		भाग
1	4	96	15	82 − 64	51 − 28	8) 994 (
		24	61			
7	3			37 − 18	66 − 28	6) 758 (
		74	46			
6	9			73 − 57	42 − 17	7) 863 (
		39	89			
5	2	52	27	98 − 79	75 − 58	4) 551 (

बच्चे से कोई भी 5 अंक पहचानने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 5 संख्या पहचानने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 2 घटाव के सवाल करने को कहें। दोनों ही सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 1 भाग का सवाल करने को कहें। वह सही होना चाहिए।

गणित की जाँच SAMPLE (2)

अंक पहचान 1-9		संख्या पहचान 11-99		घटाव		भाग
5	7	94	11	71 − 53	57 − 18	7) 872
8	4	26	87	92 − 68	36 − 19	6) 741
2	9	76	35	85 − 56	41 − 27	4) 577
3	1	48	63	62 − 37	88 − 69	8) 997
		54	29			

बच्चे से कोई भी 5 अंक पहचानने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 5 संख्या पहचानने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 2 घटाव के सवाल करने को कहें। दोनों ही सही होने चाहिए।

बच्चे से कोई भी 1 भाग का सवाल करने को कहें। वह सही होना चाहिए।

“कमाल का कैम्प” 2025 : चाइल्ड–वाइज लर्निंग प्रोग्रेस शीट

राज्य का नाम		ज़िला का नाम		ब्लॉक का नाम	
गाँव का नाम		स्वयंसेवी का नाम		स्वयंसेवी का फ़ोन नं.	
“कमाल का कैम्प” की शुरुआत का दिनाँक		अंतिम दिनांक			

बच्चे की जानकारी					बेसलाइन						एंडलाइन					
क्रम संख्या	बच्चे का नाम (बच्चे का पहला और अंतिम नाम लिखिए)	लिंग (बालक, बालिका)	आयु	कक्षा (4/5/6)	टूल सैंपल संख्या	(✔ बच्चे के उच्चतम स्तर पर सही का निशान लगाइए) प्रारंभिक	1–9	10–99	घटाव	भाग	टूल सैंपल संख्या	(✔ बच्चे के उच्चतम स्तर पर सही का निशान लगाइए) प्रारंभिक	1–9	10–99	घटाव	भाग
1																
2																
3																
4																
5																
6																
7																
8																
9																
10																
11																
12																
13																
14																
15																
				कुल योग												
अभिभावक का नाम और हस्ताक्षर (कोई भी दो)						बेसलाइन में जाँच किए गए बच्चों की कुल संख्या:						एंडलाइन में जाँच किए गए बच्चों की कुल संख्या:				
						यह डाटा बेसलाइन में अपलोड किया जाएगा						यह डाटा एंडलाइन में अपलोड किया जाएगा				

उपस्थिति शीट – "कमाल का कैम्प" 2025

गाँव का नाम		स्वयंसेवी का नाम		
मोहल्ले का नाम		स्वयंसेवी का फ़ोन नं.		

क्रम संख्या	बच्चे का नाम	कक्षा	कैम्प दिन (केवल शिक्षण कार्य के दिन)																															कुल उपस्थिति
			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
1																																		
2																																		
3																																		
4																																		
5																																		
6																																		
7																																		
8																																		
9																																		
10																																		
11																																		
12																																		
13																																		
14																																		
15																																		

“कमाल का कैम्प” : क्लास प्रोग्रेस शीट – 2025

बच्चों का उच्चतम स्तर	बेसलाइन (बच्चों के नाम और संख्या लिखिए)	एंडलाइन (बच्चों के नाम और संख्या लिखिए)
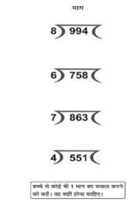 भाग		
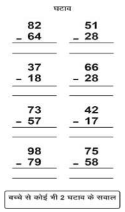 घटाव		
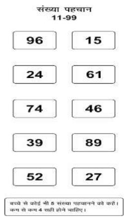 10—99		
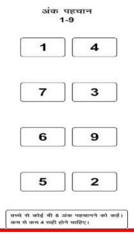 1—9		
प्रारंभिक		
कुल जाँच किए गए बच्चों की संख्या		